A Daily News Magazine
भोपाल
रविवार, 07 जुलाई, 2024

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 21 अंक 300 नगर संस्करण, पृष्ठ -8, मूल्य रू.- 2 (डाक पंजीयन संख्या: म.प्र./भोपाल/4-391/2018-20)

सुबह सवेरे

वर्षा काल में पहाड़ी नदियां बहने लगी है । चोरल डेम पर छोटी-छोटी चट्टानों से गिरते झरने का मनमोहक दृश्य।

छाया - ऋतुराज बुड़ावनवाला

subahsaverenews@gmailĐcom

facebookĐcom/subahsaverenews

wwwĐsubahsavereĐnews

twitterĐcom/subahsaverenews

सुप्रभात

जब बारिश होती है
सब कुछ रुक जाता है
सिर्फ़ बारिश होती है
रुक जाता है बच्चों का रोना
चले जाते हैं वे
अपनी ज़िद भूलकर गलियों में
नहाते हैं बारिश में देर तक
रुक जाता है
खेत में काम करता किसान
ठीक करता हुआ मेड़
पसीने और बारिश की बूंदें मिलकर
नाचती हैं खेत में
लौट आती हैं गाय-भैंसें मैदानों से
भेड़-बकरियाँ आ जाती हैं पेड़ों तले
भर जाते हैं तालाब-खेड़
भैंसे उनमें उतर जाती हैं तैरती हुई
रुक जाते हैं राहगीर
जहाँ भी मिल जाती है दुबने की ठौर !

– विजय राही

23 जुलाई को पेश होगा मोदी 3.0 का पहला बजट

मिडिल क्लास को बड़े तोहफे की उम्मीद,मिलेगी गुड न्यूज़

नई दिल्ली (एजेंसी)। नरेंद्र मोदी की अगुवाई वाली नई सरकार में पहला आम बजट 23 जुलाई को पेश किया जाएगा। इस दिन वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण लोकसभा में बजट करेंगी। संसदीय कार्य मंत्री किरण रिजिजू ने इस संबंध में जानकारी दी है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रपति ने भारत सरकार की सिफारिश पर 22 जुलाई, 2024 से 12 अगस्त, 2024 तक बजट सत्र को आयोजित करने की मंजूरी दे दी है। आगामी 23 जुलाई 2024 को लोकसभा में केंद्रीय बजट 2024-25 पेश किया जाएगा। बता दें कि केंद्र में तीसरी बार नरेंद्र मोदी प्रधानमंत्री बने हैं और उनके इस कार्यकाल में वित्त मंत्रालय का कार्यभार एक बार फिर निर्मला सीतारमण को सौंपा गया है। यह छठी बार होगा जब निर्मला सीतारमण आम बजट पेश करेंगी। देश की पहली पूर्णकालिक महिला वित्त मंत्री श्रीमती सीतारमण ने अब एक अंतरिम बजट सहित छह बजट पेश किए हैं और यह लगातार 7वां बजट होगा।

टैक्सपेयर्स के लिए इंटरेस्ट इनकम छूट की बढ़ सकती है सीमा

इस बजट में टैक्सपेयर्स को गुड न्यूज मिल सकती है। सूत्रों के मुताबिक सरकार बचत खातों यानी सेविंग्स अकाउंट्स से अर्जित ब्याज पर टैक्स छूट की राशि को बढ़ाकर 25,000 करने के प्रस्ताव पर विचार कर रही है। पिछले हफ्ते फाइनेंस मिनिस्ट्री के प्रमुख अधिकारियों के साथ हुई बैठक में बैंकों ने इस संबंध में सुझाव दिया था। एक सरकारी अधिकारी ने कहा कि इसकी समीक्षा की जा रही है और बैंकों को कुछ राहत मिल सकती है, जिन्होंने जमा बढ़ाने के लिए प्रोत्साहन की मांग की है। प्रस्ताव पर अंतिम निर्णय बजट घोषणा के करीब आने पर लिया जाएगा। साल 2020 के बजट में एक अलग इनकम टैक्स रिजीम शुरू किया गया था। यह रिजीम सरल है लेकिन इसमें टैक्सपेयर्स के लिए सभी तरह की छूट बंद कर दी गई थी। पुरानी कर व्यवस्था के तहत, बचत खातों से सालाना 10,000 तक का ब्याज धारा 80ए के तहत कर मुक्त है।

तमिलनाडु बसपा प्रदेश अध्यक्ष की घर के बाहर हत्या

- 6 बाइक सवारों ने चाकू-तलवारें मारीं

चेन्नई (एजेंसी)। तमिलनाडु में बहुजन समाज पार्टी (बीएसपी) प्रदेश अध्यक्ष के. आर्मस्ट्रॉन्ग की शुक्रवार की शाम उनके घर के बाहर छह हमलावरों ने हत्या का दी। पुलिस के अनुसार, 52 साल के आर्मस्ट्रॉन्ग शाम करीब 7 बजे चेन्नई स्थित सेम्बियम इलाके के वेणुगोपाल स्ट्रीट पर अपने घर के कुछ पार्टी कार्यकर्ताओं से बात कर रहे थे। इसी दौरान दो बाइक पर सवार छह लोग आए और उन पर चाकू-तलवारों से हमला कर दिया। इसके बाद हमलावर भाग गए। आर्मस्ट्रॉन्ग गंभीर रूप से घायल हुए थे। वहां मौजूद लोगों ने उन्हें अपोलो अस्पताल में भर्ती कराया, लेकिन डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने अब तक 8 संदिग्धों को हिरासत में लिया है। उनसे पूछताछ की जा रही है।

गुजरात में नरेन्द्र मोदी और बीजेपी को हराएगी कांग्रेस

राहुल गांधी ने अहमदाबाद में कर दिया बड़ा ऐलान

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस नेता राहुल गांधी गुजरात के दौरे पर हैं और शनिवार को उन्होंने बीजेपी को गुजरात विधानसभा चुनाव के लिहाज से बड़ा चैलेंज दिया है। राहुल गांधी ने कहा है कि अगले विधासनभा चुनाव के दौरान कांग्रेस पार्टी बीजेपी को गुजरात में हराएगी और कांग्रेस पार्टी बीजेपी द्वारा दिया गया यह चैलेंज स्वीकार करती है। दरअसल, लोकसभा में नेता विपक्ष और कांग्रेस सांसद राहुल गांधी गुजरात दौरे पर हैं और उन्होंने पार्टी कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए राहुल गांधी ने कहा कि आपने बीजेपी नेता लालकृष्ण आडवामी को रथयात्रा में रथ पर देखा था। मोदी ने मदद की थी, ये कहा जाता है। मैं संसद में सोच रहा था कि राम मंदिर के कार्यक्रम अडानी और अंबानी दिखे, लेकिन गरीब नहीं दिखे। राहुल गांधी ने कहा कि मैं आपको अंदर की बात बताता हूं कि अयोध्या के एमपी ने मुझे कहा कि अयोध्या में तीन सर्वे हुए थे और मोदी अयोध्या से लड़ना चाहते थे लेकिन उन्हें कहा गया था कि अयोध्या लड़े तो हारेंगे। राहुल ने कहा कि अयोध्या में मंदिर बनाने के लिए हमारी जमीन ली गई।

मुख्य आरोपी मधुकर को हाथरस लेकर पहुंची पुलिस

- राजनीतिक दलों ने मधुकर से संपर्क किया था, पार्टियों की फंडिंग की जांच होगी

हाथरस (एजेंसी)। हाथरस कांड के मुख्य आरोपी देव प्रकाश मधुकर को पुलिस शनिवार को दिल्ली से हाथरस लेकर पहुंची। यहां जिला अस्पताल में उसका मेडिकल कराया गया। बाहर निकला तो उसका मुंह बंधा था। मीडिया कर्मियों ने उससे पूछा कि इस घटना का जिम्मेदार कौन है। सरेंडर किया या अरेस्ट किया गया। इस पर पुलिसवाले उसे दौड़ाते हुए जीप पर बैठाकर ले गए। अब उसे कोर्ट में पेश किया जाएगा। शुक्रवार रात में देव प्रकाश को दिल्ली के नजफगढ़ से गिरफ्तार किया था। एसपी निपुण अग्रवाल ने कहा-मधुकर से राजनीतिक दलों ने संपर्क किया था। अब जांच होगी कि पार्टियों ने फंडिंग तो नहीं की थी। हाथरस हादसे के बाद शनिवार सुबह पहली बार भोले बाबा सामने आया।

अभी जेल में ही रहेंगे सिसोदिया कोर्ट से फिर लगा बड़ा झटका

5 अप्रैल को एएपी नेता ने तिहाड़ से लिखा था-जल्द बाहर आएंगे

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली शराब घोटाला मामले में तिहाड़ जेल में बंद दिल्ली के पूर्व डिप्टी सीएम मनीष सिसोदिया को राउज एवेन्यू कोर्ट से झटका लगा है। कोर्ट ने मनीष सिसोदिया की ज्यूडिशियल कस्टडी 15 जुलाई तक बढ़ा दी है। सिसोदिया की न्यायिक हिरासत सीबीआई के मामले में बढ़ाई गई है। आज यानी 6 जुलाई को सिसोदिया की न्यायिक हिरासत खत्म होने के बाद सीबीआई ने उन्हें कोर्ट में पेश किया था। जिसके बाद राउज एवेन्यू कोर्ट ने एएपी नेता की न्यायिक हिरासत 15 जुलाई तक बढ़ा दी। सीबीआई की गिरफ्तारी के बाद सिसोदिया पिछले साल 26 फरवरी से हिरासत में हैं। इसके बाद ईडी ने उन्हें अरेस्ट कर लिया था। इससे पहले बुधवार को दिल्ली की एक कोर्ट ने मनीष सिसोदिया और बीआरएस नेता के. कविता की ज्यूडिशियल कस्टडी 25 जुलाई तक बढ़ा दी थी। इसी के साथ कोर्ट ने ईडी को आरोपी व्यक्तियों को दो दिनों के भीतर चार्जशीट और दस्तावेजों की कापियां उपलब्ध कराने को कहा।

घाटी के कुलगाम में सुरक्षाबलों-आतंकियों के बीच मुठभेड़

- एक जवान शहीद,2 से 3 आतंकियों के छिपे होने की खबर

कुलगाम (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के कुलगाम के मुदरघम में आतंकियों से मुठभेड़ में घायल हुआ सेना का जवान शहीद हो गया है। शनिवार की दोपहर से सुरक्षाबलों और आतंकियों के बीच मुठभेड़ चल रही है। आतंकियों को गोली से घायल हुए जवान को अस्पताल ले जाया गया था, जहां उसने दम तोड़ दिया। वहीं, सुरक्षाबलों का ऑपरेशन जारी है। दोनों ओर से गोलीबारी हो रही है। इस ज्वाइंट ऑपरेशन को सेना और जम्मू-कश्मीर पुलिस के जवान अंजाम दे रहे हैं। 2 से 3 आतंकियों के छिपे होने खबर सामने आ रही है। डोडा जिले के गंडोह इलाके में 26 जून को सुरक्षाबलों ने तीन आतंकियों को मार गिराया था।

भारतीय संस्कृति में एक वृक्ष का महत्व दस पुत्रों के बराबर माना गया है - मुख्यमंत्री डॉ. यादव

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने 'एक पेड़ माँ के नाम-वृहद वृक्षारोपण अभियान' का किया शुभारंभ

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि भारतीय संस्कृति में एक वृक्ष का महत्व दस पुत्रों के बराबर माना गया है। वनस्पति के साथ-साथ नदी, पहाड़ आदि को जीवंत मानना हमारी संवदेनशील सांस्कृतिक परम्परा का प्रतीक है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के आहवान पर पूरे देश में संचालित 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान के अंतर्गत राज्य शासन ने भी प्रदेश में वृहद वृक्षारोपण का संकल्प लिया है। इस क्रम में प्रदेश में 5 करोड़ 50 लाख पौधे लगाने का लक्ष्य है। इंदौर में 51 लाख, भोपाल और जबलपुर जिले में 12-12 लाख पौधे लगाए जाएंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव जंबूरी मैदान पर आयोजित 'एक पेड़ माँ के नाम-वृहद पौधारोपण' कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने अपने माताजी स्व. श्रीमती लीला बाई यादव की स्मृति में आंवले मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने आंवले का पौधा लगाकर अभियान का और दीप प्रज्जवलित कर मंचीय कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इससे पहले उन्होंने विद्यार्थियों द्वारा पर्यावरण संरक्षण के लिए जागरूकता पर बनाए गए चित्रों का अवलोकन भी किया।

पौधरोपण के लिए विद्यार्थियों का उत्साह सराहनीय : मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की जयंती पर उनका स्मरण करते हुए कहा कि अंग्रेजों के बंग-भंग के षड़यंत्र और कश्मीर की समस्या का पूर्वानुमान लगाकर देश को सचेत करने में डॉ. मुखर्जी की महत्वपूर्ण भूमिका रही। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने वृक्षारोपण अभियान में विद्यार्थियों, स्वयंसेवी संस्थाओं, एनसीसी, एनएसएस द्वारा सक्रिय रूप से भाग लेने की सराहना करते हुए कहा कि सम्पूर्ण प्रदेश में वृक्षारोपण के लिए लोग उत्साहित हैं।

भोपाल नगर निगम लगाएगा एक लाख 20 हजार पौधे

महापौर श्रीमती मालती राय ने बताया कि भोपाल नगर निगम ने वृहद वृक्षारोपण अभियान के अंतर्गत एक लाख 20 हजार पौधे लगाने का संकल्प लिया है। आज के अभियान में जनभागीदारी से 26001 पौधे लगाए जा रहे हैं। उन्होंने ने बताया कि मुख्यमंत्री डॉ. यादव की पहल पर जल स्त्रोतों के संरक्षण के लिए आरंभ जल गंगा अभियान के अंतर्गत भोपाल शहर के 12 जलाशयों से 128 डम्पर गाद निकाला गया तथा 54 बावड़ियों और 42 कुंओं के संरक्षण का कार्य किया गया। सांसद श्री वी.डी. शर्मा ने कहा कि प्रदेशवासी प्रधानमंत्री श्री मोदी के आहवान के अनुरूप, अपनी माँ के नाम एक पेड़ अवश्य लगाएं तथा उसकी देखभाल भी करें।

कार्यक्रम में खेल एवं युवा कल्याण मंत्री श्री विश्वास सारंग, पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक कल्याण राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्रीमती कृष्णा गौर, नगरीय विकास एवं आवास राज्य मंत्री श्रीमती प्रतिमा बागरी, पंचायत और ग्रामीण?विकास राज्य मंत्री श्रीमती राधा सिंह, सांसद श्री आलोक शर्मा, विधायक एवं पूर्व प्रोटेम स्पीकर श्री रामेश्वर शर्मा, विधायक श्री भगवान दास सबनानी, जनप्रतिनिधि सहित बड़ी संख्या में नागरिक उपस्थित रहे।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 40.3 °c
न्यूनतम 36°c

2

सुबह सवेरे

भोपाल ■ रविवार, 07 जुलाई 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।
चाणक्य नीति

भारी बारिश के चलते रोकी गई अमरनाथ यात्रा

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर में भारी बारिश के कारण शनिवार को अमरनाथ तीर्थयात्रा को अस्थायी रूप से रोक दिया गया है। उत्तर और दक्षिण कश्मीर के दोनों बेस कैंप से चलने वाली यात्रा को फिलहाल रोक दिया गया है। अधिकारियों ने कहा कि भारी बारिश के कारण उत्तरी कश्मीर के बालटाल और दक्षिण कश्मीर के नुनवान (पहलगाम) बेस कैंप से यात्रियों की आवाजाही अस्थायी रूप से रोक दी गई है। बालटाल बेस कैंप से यात्रियों को गुफा मंदिर तक पैदल या टट्टुओं पर 14 किलोमीटर लंबा रास्ता तय करना पड़ता है, जबकि पारंपरिक नुनवान (पहलगाम)

अस्थायी रूप से लगाया ब्रेक,प्रशासन ने लिया फैसला

बेस कैंप से जाने वालों को 48 किलोमीटर की दूरी तय करनी पड़ती है, जिसमें चार दिन एक तरफ से लगते हैं। पहलगाम-गुफा मंदिर मार्ग में पहलगाम से चंदनवारी (24 किलोमीटर), चंदनवारी से शेषनाग (13 किलोमीटर), शेषनाग से पंचतरणी (5 किलोमीटर) और पंचतरणी से गुफा मंदिर (6 किलोमीटर) शामिल हैं। 14 किलोमीटर लंबे बालटाल बेस कैंप मार्ग से जाने वाले लोग गुफा मंदिर के अंदर 'दर्शन' के बाद उसी दिन बेस कैंप लौट आते हैं। अमरनाथ गुफा मंदिर में शुक्रवार को 20 हजार से अधिक तीर्थयात्रियों ने दर्शन किए।

संक्षिप्त समाचार

हाथरस भगदड़ कांड से ओडिशा पुलिस ने सीखा सबक

जगन्नाथ यात्रा में भीड़ मैनेंजमेंट के लिए बनाया खास प्लान

नई दिल्ली (एजेंसी)। पिछले सप्ताह मंगलवार को यूपी के हाथरस में एक सत्संग के दौरान भगदड़ मच गई थी, जिसकी चपेट में आने के चलते 122 लोगों की जान चली गई थी। इसके बाद से

ही भीड़ को मैनेजमेंट को लेकर सवाल उठाए जा रहे हैं। इस बीच पुरी में भगवान जगन्नाथ की यात्रा निकाली जानी है, जिसमें 1 2 या तीन नहीं बल्कि 10 लाख से भी ज्यादा श्रद्धालुओं के शामिल होने की उम्मीद है। भीड़ मैनेजमेंट को लेकर पुलिस एआई का सहारा लेगी।

कनाडा सरकार ने भारतीय कामगारों के लिए खोले दरवाजे

एक्सप्रेस एंट्री ड्रॉ का किया ऐलान वीजा संबंधी नियमों में भी बदलाव

ओटावा (एजेंसी)। कनाडा में काम करने के लिए जाने की अच्छा रखने वाले भारतीयों की बड़ी संख्या है। ऐसी इच्छा रखने वालों को कनाडा सरकार मौका दे रही है। कनाडा इमिग्रेशन,

रिफ्यूजी और सिटिजनशिप कनाडा (आईआरसीसी) ट्रेड प्रोफेशन में कुशल भारतीय कामगारों के लिए अपने दरवाजे खोल रहा है। आईआरसीसी ने हाल ही में ट्रेड प्रोफेशन में कुशल कामगारों को लक्षित करते हुए एक विशेष एक्सप्रेस एंट्री ड्रॉ आयोजित किया। दिसंबर 2023 के बाद यह पहला ऐसा ड्रॉ है।

● केजरीवाल की गिरफ्तारी पर पत्नी का बड़ा खुलासा

एनडीए के सांसद एमएसआर का लिया नाम, कहा-उन्होंने झूठा बयान दिया

नई दिल्ली (एजेंसी)। सीएम अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी के मामले पर उनकी पत्नी सुनीता केजरीवाल ने बड़ा दावा किया है। उन्होंने कहा कि दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल

गहरी राजनीतिक साजिश का शिकार हुए, गवाह के झूठे बयान पर ईडी ने उन्हें गिरफ्तार किया। उन्होंने वीडियो मैसेज जारी कर कहा कि क्या आपको पता है कि सीबीआई ने केजरीवाल को गिरफ्तार क्यों किया है। उनकी गिरफ्तारी एनडीए के एक सांसद के बयान पर गिरफ्तार किया है। उनका नाम है मगुंटा श्रीनिवासुलु रेड्डी यानी एमएसआर। एमएसआर आंध्र प्रदेश से एनडीए के सांसद हैं। सुनीता केजरीवाल ने कहा कि एनडीए के सांसद मंगुटा रेड्डी ने ईडी को जो पहले दो बार बयान दिए, वह ईडी को पसंद नहीं आए।

14 जुलाई को बनेगा विश्व रिकॉर्ड: मंत्री विजयवर्गीय

● डिप्टी सीएम राजेंद्र शुक्ल बोले- 6 बच्चों की मौत पर अभी ज्यादा जानकारी नहीं ● संख्या में साधु-संत मौजूद रहे

इंदौर (नप्र)। इंदौर में शनिवार को 51 लाख पौधे लगाने के महाअभियान की शुरुआत हुई। पितृ पर्वत पर एक पेड़ मां के नाम से आयोजित कार्यक्रम में नगरीय प्रशासन मंत्री कैलाश विजयवर्गीय के साथ डिप्टी सीएम राजेंद्र शुक्ल सहित बड़ी संख्या में साधु-संत मौजूद रहे। डिप्टी सीएम राजेंद्र शुक्ल ने कहा कि प्रदेश के साथ देशभर में एक पेड़ मां के नाम लगाने के अभियान की शुरुआत हो गई है। धरती का श्रृंगार वृक्षारोपण से ही हो सकता है। पितृ पर्वत पर 3 लाख पेड़ तैयार हो चुके हैं इसके लिए मैं विजयवर्गीय जी को बधाई देता हूं। इंदौर के युग पुरुष आश्रम में 6 बच्चों के मौत के सवाल पर शुक्ल ने कहा कि उस विषय पर अभी जानकारी लेना है पूरी जानकारी लेने के बाद ही कुछ बोल पाएंगे।

पांच सालों में 5 डिग्री टेम्प्रेचर कम करना है :मंत्री कैलाश विजयवर्गीय

मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने कहा कि इंदौर में पहले 36-38 का तापमान हुआ करता था मालवा में कभी भी 40 से अधिक टेम्प्रेचर नहीं हुआ। लेकिन इस बार 48 डिग्री पहुंच गया यह बड़ी समस्या है। मैनें तभी संकल्प लिया और कहा कि पांच सालों में 5 डिग्री टेम्प्रेचर कम करना है।

हमारे लिए 51 लाख गड्?ढे करने का बड़ा चैलेंज था। लेकिन अब तक 48 लाख गड्ढे हो चुके हैं। अभी तक 9 लाख 20 हजार पेड़ असम में लगे है। लेकिन अब 14 तारिख को गृह मंत्री अमित शाह के मौजूदगी में 11 लाख पेड़ लगाकर विश्व रिकॉर्ड बनाया जाएगा। बता दें कि इस महाअभियान के तहत पितृ पर्वत पर 11 हजार पौधे लगाए जा रहे हैं।

हम आने वाले पीढ़ी को कांक्रीट की जगह हरियाली दें :मेयर पुष्यमित्र भार्गव

मेयर पुष्यमित्र भार्गव ने कहा कि हम आने वाले पीढ़ी को कांक्रीट की जगह हरियाली दें और इंदौर के भूजल स्तर को बढ़ाने के लिए अधिक से अधिक पेड़ लगाए और इस अभियान को सफल बनाने में सहयोग करें। श्री क्षेत्र वाल्मिकी धाम पीठाधीश्वर एवं राज्यसभा सदस्य बाली उमेश नाथ जी महाराज ने कहा कि प्रधानमंत्री जी के एक पेड़ मां के नाम अभियान के क्रम में इंदौर शहर ने इस संकल्प की शुरुआत पितृरेश्वर महादेव से संत समाज के सानिध्य में की गई है। हम सभी संकल्प लें कि सभी लोग पौधे लगाएं और उसके संरक्षण का भी ध्यान रखें और प्रतिदिन उसमें जल अर्पण करें। उन्होंने कहा कि पर्यावरण संरक्षण के लिए आवश्यक है कि हम वनों का निर्माण करें और परिवार का प्रत्येक सदस्य पर्यावरण संरक्षण के लिए पौधा जरूर लगाएं। कार्यक्रम में अरुण गिरि महाराज, टाटम्बरी महाराज, कनकेश्वरी देवी कई संत शामिल हुए।

जिला अस्पताल की बिल्डिंग आठ माह में पूरी करें:डिप्टी सीएम राजेंद्र शुक्ला

डिप्टी सीएम राजेंद्र शुक्ला ने जिला अस्पताल की निर्माणाधीन बिल्डिंग का निरीक्षण किया। उन्होंने भवन की जी प्लस वन बिल्डिंग का करीब डेढ से दो माह में तथा शेष पूरे भवन का आगामी सात से आठ माह में काम पूर्ण करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि काम को पूर्ण गुणवत्ता के साथ निर्धारित समय सीमा में पूर्ण कराया जाएं। समय सीमा में निर्माण कार्य पूरा करने के लिए आवश्यक शिफ्ट बढाने की कार्रवाई सुनिश्चित की जाएं। जिला अस्पताल की निर्माणाधीन बिल्डिंग का डिप्टी सीएम ने किया निरीक्षण। इससे बाद डिप्टी सीएम का रेसीडेंसी कोठी इंदौर पर आगमन होगा। वहां से श्री अरबिंदो इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस इंदौर में भारत के ग्रामीण स्वास्थ्य की ओर एक कदम कार्यक्रम में सम्मिलित होंगे। उसके बाद महात्मा गांधी मेडिकल कॉलेज की साधारण सभा की बैठक लेंगे। शुक्ल शाम 6 बजे स्थानीय कार्यक्रम में शामिल होने के बाद शाम 7 बजे भोपाल रवाना होंगे। 7 जुलाई को सुबह 11 बजे केंद्रीय मंत्री भूपेंद्र यादव आयोजन में शामिल होंगे। केंद्रीय मंत्री यादव बीएसएफ के पास मातृ वंदन में पौधारोपण करेंगे। 9 जुलाई को लोकसभा स्पीकर ओम बिरला पौध रोपण कार्यक्रम में भाग लेंगे। विजयवर्गीय ने बताया कि केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह अब 14 जुलाई को कार्यक्रम में शामिल होंगे। सुबह 11 बजे इंदौर पहुंचेंगे और पहले पितृ पर्वत पहुंचकर 1 पेड़ मां के नाम लगाएंगे। यहां से रेवती रेंज पहुंचेंगे और एक ही दिन में 11 लाख पौधे लगाने के वर्ल्ड रिकॉर्ड के तहत पौधे रोपेंगे। वे जीएसीसी से 55 पीएम कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस का शुभारंभ भी करेंगे।

भाकपा का मप्र के जन विरोधी बजट के खिलाफ प्रदर्शन

भोपाल। मध्य प्रदेश सरकार द्वारा विधान सभा में प्रस्तुत बजट की जन विरोधी नीतियों के खिलाफ भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी जिला परिषद भोपाल ने 6 जुलाई को स्थानीय इतवारा क्षेत्र में विरोध प्रदर्शन किया।इस अवसर पर भाकपा नेता कॉमरेड शैलेन्द्र शैली,कॉमरेड शिवशंकर मौर्य,कॉमरेड ए एच सिद्दीकी ने बजट में महंगाई ,गरीबी ,बेरोजगारी को कम करने के लिए कोई प्रभावकारी नीतियां नहीं होने पर मध्य प्रदेश सरकार की भर्त्सना की ।भाकपा नेताओं ने समान काम का समान वेतन देने,न्यूनतम सम्मानजनक वेतन देने,निजीकरण , ठेकेदारी समाप्त करने,पेट्रोलियम पदार्थों पर टैक्स कम करने,धर्म निरपेक्ष मूल्यों की रक्षा करने और नफ़रत की राजनीति समाप्त करने की मांग की ।

बरसते पानी में हुए इस विरोध प्रदर्शन में कॉमरेड मुन्ने खां,फिदा हुसैन, सईद खां, नवाबउद्दीन , बी पी मिश्रा,सरवन ,राजू खान ,असलम ,अजीत ,महेश ,नरेश हनीफ सहित लगभग 50 सदस्य शामिल हुए।

सीएम कपिला गौशाला पहुंचे, कहा दूध पर बोनस मिलेगा

मोहन यादव बोले-चिंतामण मार्ग फोरलेन होगा, वंदे मेट्रो ट्रेन उज्जैन-देवास-इंदौर व पीथमपुर को जोड़ेगी

उज्जैन (नप्र)। प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव शनिवार को उज्जैन पहुंचे, यहाँ सबसे पहले सीएम चिंतामन रोड स्थित सम्राट विक्रमादित्य भवन चिंतामण गणेश मार्ग में शिव परिवार मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा और विद्यालय के भूमि पूजन कार्यक्रम में शामिल हुए। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि डॉ. मोहन यादव,मुख्य वक्ता श्रीराम आरावकर,अखिलेश मिश्रा,विशेष अतिथि सांसद अनिल फिरोजिया, श्री 1008 महंत योगी पीर रामनाथ जी महाराज और श्री श्री 108 श्री महंत श्यामगिरी जी महाराज (राधे-राधे बाबा) में मौजूद रहे।

सीएम सबसे पहले शिव परिवार मंदिर के हवन में प्राण प्रतिष्ठा में शामिल हुए इसके बाद उन्होंने मंदिर में जाकर पूजन कर आशीर्वाद लिया। मंच पर सीएम के स्वागत के बाद सीएम सहित सभी अतिथियों ने सरस्वती स्कूल का भूमि पूजन किया। इस दौरान सीएम ने कहा मंदिर दक्षिण शैली में बना है और उज्जैन में बाबा महाकाल का मुख भी दक्षिण दिशा में है साथ ही में खुद भी दक्षिण विधान सभा से जीतकर आया हु। सीएम ने मंच से उज्जैन के विकास की बात की कहा की उज्जैन चिंतामन मंदिर मार्ग फॉर लेन होगा, वन्दे मेट्रो ट्रेन शुरू होगी जो

देवास इंदौर उज्जैन पीथमपुर के लिए सर्किल ट्रेन बनेगी,साथ ही उज्जैन में एक रेल का बायपास बनेगा इसके लिए रेल मंत्री से बात हो गई है इससे चिंतामन से आने वाली गाडी पुराने उज्जैन रेलवे स्टेशन पर आने के बजाये सीधे नागदा जा सकेगी। इसी तरह नागदा में भी बायपास ट्रेक बनेगा जिससे दिल्ली से आने वाली ट्रेन सीधे उज्जैन आ सकेगी, सीएम ने कहा कि उज्जैन के विकास के कार्यो का काम क्रम बद्ध तरीके से होगा।

कार्यक्रम के बाद सीएम ग्राम रत्नाखेड़ी स्थित कपिल गौशाला में एक पेड़ मां के नाम अभियान और गौशाला संवर्धन कार्यक्रम में शामिल हुए। मुख्यमंत्री डॉ यादव ने कपिला गौशाला में पौधरोपण कर संपूर्ण जिले में एक पेड़ माँ के नाम अभियान का शुभारंभ किया। इस दौरान मुख्यमंत्री डॉ यादव द्वारा कपिल गौशाला का भ्रमण कर अवलोकन किया गया। मुख्यमंत्री डॉ यादव ने कपिल गौशाला में गौमाता का पुष्पमाला पहनाकर और तिलक लगाकर पूजन किया और आरती उतारी। इस दौरान उन्होंने नन्हे बछड़ों को पशु चारा खिलाकर दुलार भी किया। उन्होंने गौशाला में सीएसआर से उपलब्ध आधुनिक पशु चारा मशीन सहित अन्य उपकरणों का अवलोकन किया। कपिला गौशाला के श्री अच्युतानंद जी महाराज ने गौशाला में किए गए नवाचार और गौशाला संवर्धन के मास्टर प्लान की जानकारी दी।

इसके बाद सीएम ने कहा कि गौ शाला को संतो और समाज से जोड़ेंगे , सड़क पर घूमने वाली और कम दूध देने वाले गाय के पालन के लिए कदम उठाये जा रहे है। दूध उत्पादन पर बोनस शुरू करने वाली है सरकार।

कुरान पढ़ाने वाले पजशकियान बने ईरान के नए राष्ट्रपति

इराक से जंग लड़ी

हिजाब का विरोध किया, कट्टरपंथी जलीली को 30 लाख वोट से हराया

तेहरान (एजेंसी)। ईरान में मसूद पजशकियान देश के 9वें राष्ट्रपति बन गए हैं। उन्होंने कट्टरपंथी नेता सईद जलीली को 30 लाख वोटों से हराया। ईरान में शुक्रवार को दूसरे चरण की वोटिंग हुई थी। इसमें करीब 3 करोड़ लोगों ने मतदान किया था। ईरानी स्टेट मीडिया के मुताबिक, पजशकियान को 1 करोड़ 64 लाख वोट

मिले, जबकि जलीली को 1 करोड़ 36 लाख वोट हासिल हुए। पजशकियान डॉक्टर होने के साथ-साथ कुरान भी पढ़ाते हैं। 5 जुलाई को 16 घंटे तक चली वोटिंग में देश की करीब 50 फीसदी (3 करोड़ से ज्यादा) जनता ने वोट डाला था।

पुतिन के लिए संजीवनी बनेंगे पीएम मोदी, यात्रा कल से

दुनिया में अलग-थलग पड़े रूसी राष्ट्रपति कर रहे बेसब्री से इंतजार

मॉस्को (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जल्द 8 और 9 जुलाई के रूस के दौरे पर रहेंगे। प्रधानमंत्री मोदी के तीसरे कार्यकाल ये पहला द्विपक्षीय दौरा है, जहां वे रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन से मुलाकात करेंगे। इसके साथ ही साल 2002 में रूस के यूक्रेन पर हमले के बाद से भी यह पीएम मोदी का पहला दौरा होगा। दोनों देश साल 2000 से वार्षिक शिखर सम्मेलन आयोजित करते रहे हैं, लेकिन यूक्रेन युद्ध के बाद से यह स्थगित रहा है। ऐसे में सवाल उठता है कि आखिर पीएम मोदी ने इसे अब क्यों शुरू किया है और तीसरे कार्यकाल में पहली द्विपक्षीय यात्रा के लिए मॉस्को को चुनने की वजह क्या

है। जब दुनिया के अधिकांश देशों ने पुतिन से दूरी बनाए रखी है, ऐसे में पीएम मोदी का मॉस्को जाना रूसी नेता पुतिन के लिए बहुत मायने रखता है। भारत और रूस की दोस्ती दशकों पुरानी है। इतिहास में जरूरत के समय रूस हमेशा भारत के साथ खड़ा रहा।

पुतिन के लिए बेहद ही खास है मोदी की यात्रा

पीएम मोदी की मॉस्को यात्रा पुतिन के लिए एक बड़ा मोड़ साबित होने जा रही है। यह उन्हें नई वैधता देगी और उनका दुनिया में अलगाव कम होगा। पीएम मोदी की इस यात्रा से दूसरे नेताओं, खासकर ग्लोबल साउथ के नेताओं के लिए ऐसा करने का रास्ता खुल सकता है। पुतिन के लिए यह एक सुखद बदलाव की तरह होगा, जिन्हें बहिष्कृत करने के लिए अमेरिका ने हर संभव प्रयास किया है। इस यात्रा में एक परिदृश्य की कल्पना की जा रही है कि संभव है पीएम मोदी और पुतिन यूक्रेन मुद्दे पर बात करें।

पहले टी-20 मैच में जिम्बाब्वे ने भारत को 13 रनों से हराया, गिल-सुंदर के अलावा नहीं चला कोई बल्लेबाज

हरारे (एजेंसी)। शनिवार को भारत और जिम्बाब्वे के बीच पांच मैचों की टी20 सीरीज की शुरुआत हुई। पहला मुकाबला शाम 4.30 बजे से हरारे स्पोर्ट्स क्लब में खेला गया था। भारत ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी

का फैसला किया। जिम्बाब्वे ने भारत के सामने 116 रन का लक्ष्य रखा। भारतीय टीम 19.5 ओवर में 10 विकेट पर 102 रन ही बना सकी। जिम्बाब्वे ने भारत को पांच मैचों की टी20 सीरीज के पहले मैच में 13 रनों से हरा दिया। इस मैच में शुभमन गिल और वाशिंगटन सुंदर के अलावा भारत का कोई बल्लेबाज नहीं चला।

इस सीरीज का पहला मैच खेला गया जिसमें भारत को हार का सामना करना पड़ा है। इसी के साथ जिम्बाब्वे ने सीरीज में 1-0 की बढ़त ले ली है।

परिक्रमा

एक-दूसरे पर गरजते-बरसते और फब्तियां कसते राहुल-मोदी

अरुण पटेल

लेखक सुबह सवेरे के प्रबंध संपादक हैं।
संपर्क-
09425010804
07999673990

2024 के लोकसभा चुनाव के बाद संसद सत्र काफी हंगामेदार रहा तथा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी एक-दूसरे पर गरजते-बरसते, फब्तियां कसते नजर आये। लोकसभा में दस साल के बाद नेता प्रतिपक्ष के रुप में राहुल गांधी का मुकाबला नरेन्द्र मोदी से रहा और दोनों ने एक-दूसरे पर बढ़त लेने की भरपूर कोशिश की। राज्यसभा में कांग्रेस अध्यक्ष और विपक्ष के नेता मल्लिकार्जुन खरगे के तेवर भी काफी तीखे रहे और एक बार उनकी सभापित जगदीप धनखड़ से नोंकझोक भी हो गयी। वहीं राहुल गांधी ने इशारों ही इशारों में लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला को भी अपने अंदाज में समझाइश देने की कोशिश की। वहीं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जहां अपने अंदाज में यह जताने की कोशिश की कि भले ही भाजपा लोकसभा में बहुमत से काफी पीछे रह गयी हो लेकिन उनके चुनाव पूर्व गठबंधन को बहुमत मिला है इसलिए उनकी कार्यशैली में कोई अन्तर आने वाला नहीं है। जिस प्रकार उन्होंने 2014 और 2019 के लोकसभा चुनाव के बाद सरकार चलाई थी उसी अंदाज में वह अभी भी हैं, जबकि विपक्ष ने राहुल गांधी की अगुवाई में यह अहसास कराने की कोशिश की कि विपक्ष अब काफी मजबूत है और वह सदन से लेकर सड़क तक मोदी सरकार की घेराबंदी करने का कोई अवसर हाथ से नहीं जाने देगा। इस बीच प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और अन्य केंद्रीय मंत्रियों से मिलकर आंध्रप्रदेश के मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू ने अपनी मांगों की लम्बी फेहरिस्त केंद्र सरकार के सामने रख दी है, देखने वाली बात यही होगी कि उनकी मांगों को केंद्र सरकार किस सीमा तक पूरा करती है, यह वित्त मंत्री निर्मला सीतारमन द्वारा पेश किए जाने वाले बजट प्रावधानों से ही पता चल सकेगा। लेकिन नायडू कांग्रेस से भी अपने तार तेलंगाना के मुख्यमंत्री रेवन्त रेड्डी के माध्यम से जोड़े रखना चाहते हैं।गुरु-शिष्य की यह जोड़ी राजनीति में क्या कोई नया गुल खिलायेगी या नहीं इस पर राजनीतिक पर्यवेक्षकों की नजरे लगी हुई हैं। रेवंत रेड्डी के राजनीतिक गुरु नायडू हैं और इस समय दोनों अलग-अलग राजनीतिक खेमों में बल्लेबाजी कर रहे हैं। राष्ट्रपति के अभिभाषण पर संसद में एक जीवन्त लोकतंत्र का न केवल अहसास कराया गया बल्कि हंगामे, तीखी नोंकझोंक और एक-दूसरे पर फब्तियां कसने का कोई अवसर सत्तापक्ष व विपक्ष ने नहीं छोड़ा। अपने प्रयासों में कौन कितना सफल रहा यह तो इस बात पर निर्भर करेगा कि किसकी बात मतदाताओं के गले उतरी।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर राहुल गांधी ने सीधे-सीधे तीखा शाब्दिक हमला करते हुए कहा कि अपने को हिन्दू कहते हैं और हमेशा हिंसा फैलाते रहते हैं, हिंसा की बात करने वाला हिंदू नहीं हो सकता। इस पर बीच में हस्तक्षेप करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि पूरे हिन्दू समाज को हिंसक कहना गलत है। इस प्रकार उन्होंने हिन्दू समाज में अपने ढंग से यह संदेश देने की कोशिश की कि राहुल हिन्दू समाज के खिलाफ बोल रहे हैं, लेकिन तुरन्त ही राहुल ने भी कहा कि नहीं-नहीं, नरेंद्र मोदी, संघ और भाजपा, पूरा हिन्दू समाज नहीं है। राहुल का कहना था कि भगवान राम की जन्मभूमि अयोध्या ने भाजपा को संदेश दिया है। अयोध्या की जनता के दिल में नरेंद्र मोदी जी ने भय पैदा कर दिया, उनकी

जमीन ली, घर गिरा दिये। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि मुझे लोकतंत्र ने सिखाया है कि विपक्ष के नेता को गंभीरता से लेना चाहिये। सोमवार एक जुलाई को दोनों सदनों में इस मायने में जीवन्त लोकतंत्र का अहसास हुआ जब दिन भर बहस चली, बायकाट नहीं हुआ और हंगामा तो खूब हुआ पर पक्ष-प्रतिपक्ष दोनों ने संयम दिखाया। सत्तापक्ष ने हस्तक्षेप कर आपत्ति दर्ज कराई लेकिन बहस चलती रही। यहां तक कि नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने जब लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला पर सवाल उठाये तो भी सदन पटरी पर रहा। लोकसभा में राहुल गांधी और राज्यसभा में कांग्रेस अध्यक्ष तथा सदन में विपक्ष के नेता मल्लिकार्जुन खरगे ने सरकार पर तीखे वार किये और लोकसभा चुनाव के दौरान विपक्ष पर लगे आरोपों का करारा जवाब देने की भी कोशिश की। राहुल पर निशाना साधने में कई वरिष्ठ केंद्रीय मंत्री और सत्तापक्ष पीछे नहीं रहा। लोकसभा अध्यक्ष ने बाद में जब राहुल गांधी के भाषण के कुछ अंश कार्यवाही से विलोपित कर दिये इस पर भी राहुल गांधी ने एतराज जताया। जबकि भाजपा की मांग थी कि राहुल गांधी तुरन्त माफी मांगे। भाजपा अध्यक्ष और केंद्रीय मंत्री जे.पी. नड्डा का कहना था कि पांच बार के सांसद होने के बाद भी राहुल गांधी संसदीय नियम और मर्यादा नहीं सीख पाये हैं। नड्डा के अलावा केंद्रीय मंत्री अश्वनि वैष्णव, किरण रिजीजू और सांसद सुधांशु त्रिवेदी ने राहुल पर झूठे बयान और अमर्यादित आचरण से नेता प्रतिपक्ष पद की गरिमा गिराने का आरोप लगाया। साथ ही तंज किया कि आसंदी से कही गयी बात राहुल को समझ में नहीं आती, भला नये चुनकर आये सांसद उनसे क्या सीखेंगे?

संगठन में बदलाव करती भाजपा

लोकसभा चुनाव में जहां भाजपा ने अपने दम पर 370 और सहयोगियों के साथ लगभग 400 सीटें जीतने का लक्ष्य रखा था, लेकिन वह इस लक्ष्य से काफी पीछे रह गयी, यहां तक कि अपने दम पर वह केवल 240 सीटें ही जीत पायी। अब उसने संगठन को चुस्त-दुरुस्त करने का बीड़ा उठा लिया है और 24 राज्यों के प्रभारी व सह-प्रभारियों की नियुक्ति कर दी है। ऐसा महसूस न हो कि उसे जहां सफलता नहीं मिली वहां के ही प्रभारी बदले गये हैं, यही कारण रहा कि 29 सीटें जीतने के बाद भी मध्यप्रदेश के प्रभारी बदल दिये गये हैं। मध्यप्रदेश में मुरलीधर राव की छुट्टी हो गयी है। जहां तक राव का सवाल है उनके कुछ बयानों से अनावश्यक विवादों की स्थिति ही पैदा होती रही थी। मुरलीधर राव प्रभारी रहे हैं लेकिन उनके जाने की वजह शायद यह भी थी कि वे प्रदेश की भाजपाई राजनीति में इतने हाशिए पर खिसक गये थे कि उन्हें पार्टी के ही लोग भूल गये। इसका सबसे बड़ा कारण उनका यह बयान था कि बनिया, ब्राह्मण तो उनकी जेब में हैं। इसके बाद ही पार्टी के नेताओं ने शीर्ष नेतृत्व से इसकी शिकायत की थी। विधानसभा और लोकसभा चुनाव हो गये, भाजपा ने लोकसभा की सभी 29 सीटें जीत लीं तथा विधानसभा में भी प्रचंड बहुमत हासिल कर लिया लेकिन मुरलीधर राव कहीं नजर नहीं आये और वे एक प्रकार से प्रतीकात्मक प्रभारी ही रह गये थे। अब मध्यप्रदेश में यूपी के विधान परिषद सदस्य डॉ. महेंद्र सिंह को प्रभारी बनाया गया है और उनके साथ सह-प्रभारी सतीश उपाध्याय को बनाया गया, जो कि दिल्ली प्रदेश भाजपा के अध्यक्ष रह चुके हैं। भाजपा अध्यक्ष व केंद्रीय मंत्री जे.पी. नड्डा ने विभिन्न प्रदेशो में प्रभारी-सह प्रभारियों की नियुक्ति की है उसके अनुसार छत्तीसगढ़ का प्रभारी विधायक नितिन नवीन को बनाया गया है। झारखंड जहां चुनाव होने हैं वहां सांसद लक्ष्मीकांत वाजपेयी संगठन के प्रदेश प्रभारी बनाये गये हैं जबकि केंद्रीय मंत्री तथा विदिशा से सांसद शिवराजसिंह चौहान वहां के चुनाव प्रभारी हैं, सह-प्रभारी के रुप में असम के मुख्यमंत्री हेमंत विस्वा शरमा बनाये गये हैं।

और यह भी

मध्यप्रदेश की 16वीं विधानसभा का तीसरा सत्र भी हंगामें की भेंट चढ़ गया, यह मानूसन सत्र 19 दिन का था जो पांच दिन में ही समाप्त हो गया। 14 दिन पहले ही सदन की कार्रवाई अनिश्चित काल के लिए स्थगित हो गयी। सत्र के पांचवें दिन 5 जुलाई शुक्रवार को आठ घंटे कामकाज के बाद विधानसभा की कार्रवाई अनिश्चितकाल के लिए स्थगित कर दी गयी। सत्र 14 दिन पहले समाप्त होने के कारण विधायकों के महत्वपूर्ण सवाल तो धरे के धरे रह गये, हालांकि सरकार ने अपना सरकारी कामकाज पूरा कर लिया। संसदीय कार्यमंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने कहा कि विधानसभा के वर्तमान सत्र के लिए निर्धारित सभी वित्तीय व शासकीय कार्य पूर्ण हो चुके हैं इसलिए कार्रवाई अनिश्चित काल के लिए स्थगित कर दी जाए। विधानसभा अध्यक्ष नरेंद्र सिंह तोमर ने यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया, हालांकि विपक्ष ने इसका विरोध किया था। 16वीं विधानसभा और उसके पहले 15वीं विधानसभा के भी कई सत्र निर्धारित समय से पूर्व ही अनिश्चितकाल के लिए स्थगित हो चुके हैं, देखने वाली बात यही होगी कि इस विधानसभा के कार्यकाल में ऐसा कौन सा सत्र होगा जो निर्धारित अवधि तक चलेगा और विधायकों को समस्यायें उठाने का भरपूर मौका मिलेगा।

सीबीएसई पैटर्न पर होगी 9वीं-10वीं की गणित की परीक्षा

बैसिक सिलेक्ट करने के बाद आगे स्टैंडर्ड मैथ पढ़ना चाहते हैं तो देना होगा सप्लीमेंट्री एग्जाम

भोपाल (नप्र)। अगर आपके परिवार में एमपी बोर्ड से कोई 9वीं और 10वीं में पढ़ाई कर रहा है, तो यह खबर आपके लिए है, क्योंकि बोर्ड 9वीं और 10वीं में सीबीएसई पैटर्न पर एग्जाम आयोजित करेगा। माध्यमिक शिक्षा मंडल बोर्ड के अनुसार सत्र 2024-25 में 9वीं और सत्र 2025-26 में 10वीं में यह लागू कर दिया जाएगा।

इसे लेकर एक्सपर्ट्स ने भी इसे बोर्ड का पॉजिटिव कदम बताया है। एक तरफ जहां इससे रिजल्ट में सुधार आएगा, तो दूसरी तरफ गणित में कमजोर छात्रों के लिए भी यह उपयोगी होगा। जानते हैं कि एमपीबीएसई के सचिव डॉक्टर केडी त्रिपाठी से इस पहल के बाद क्या ध्यान रखना होगा छात्रों को...

जो बच्चे गणित नहीं पढ़ना चाहते, उनके लिए उपयोगी- केडी त्रिपाठी कहते हैं कि 9वीं और 10वीं में अब गणित की दो कैटेगिरी रहेंगी, जिसमें बेसिक और स्टैंडर्ड मैथमेटिक्स शामिल हैं। ऐसे भी बच्चे हैं, जिसको आगे चलकर मैथेमिटक्स नहीं पढ़ना है। अन्य स्टीम जैसे बॉयोलॉजी कॉमर्स या ह्यूमैनिटीज आदि पढ़ना है। ऐसे में उनको सुविधा होगी कि वह बेसिक मैथमेटिक्स सिलेक्टर कर पढ़ाई कर सकते हैं। इस साल यह पैटर्न हमने 9वीं कक्षा में शुरू कर दिया है। वहीं, 10वीं में आने वाले सत्र से यह नियम लागू होगा। इसके अलावा 9वीं क्लास के लिए ऑप्शन रहेगा, अगले वर्ष के लिए दसवीं में क्या पढ़ना चाहते हैं।

इसलिए लिया यह निर्णय- केडी त्रिपाठी कहते हैं कि इससे पहले यह सुविधा सीबीएसई में थी। अब यह एमपी बोर्ड में भी शुरू की गई है। आम तौर पर देखा गया है कि गणित में सबसे अधिक बच्चे फेल होते हैं। इसी को ध्यान में रखते हुए बोर्ड ने यह निर्णय लिया है, जिससे बच्चों को पढ़ाई करने के लिए एक तरफ आसानी होगी। दूसरी तरफ वह बच्चे जिनको अन्य स्टीम में जाना है। यह उनके लिए खासकर के बेहतर ऑप्शन होगा।

भोपाल पहुंचे पूर्व क्रिकेटर संदीप पाटिल

कहा- चार साल से क्रिकेट से दूर हूं, वर्ल्ड का फाइनल भी नहीं देखा

भोपाल (नप्र)। पूर्व भारतीय क्रिकेटर संदीप पाटिल एक पेंट कंपनी के कार्यक्रम में पहुंचे, इस दौरान उन्होंने मीडिया को बताया कि उन्होंने चार साल से क्रिकेट नहीं देखा है, वहीं वर्ल्ड कप के फाइनल के बारे में बताया कि मैंने वर्ल्ड कप भी नहीं देखा और ना

ही इसके मैच। वर्ल्ड कप फाइनल के बारे में बात करते हुए संदीप पाटिल ने बताया कि अगले दिन अखबारों से उन्हें इसके बारे में पता चला कि भारत ने वर्ल्ड कप जीत लिया है। उन्होंने कहा कि मध्य प्रदेश में वह पहले भी आ चुके हैं, उन्होंने कहा कि उन्होंने मध्य प्रदेश के क्रिकेट खेला है। इसलिए पहले भी भोपाल आया हूं यह शहर उन्हें बहुत पसंद है।

युगदृष्टा डॉ. मुखर्जी का देश रहेगा सदा आभारी - मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री ने डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी सभागृह का किया लोकार्पण

विकास भवन में डॉ. मुखर्जी की जयंती पर हुआ कार्यक्रम

भोपाल(नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी युगदृष्टा थे। उन्होंने देश के सामने मौजूद समस्याओं का पूर्वानुमान लगाकर देश की एकता बनाए रखने और देशवासियों को जागरूक करने का अद्भुत कार्य किया। अंग्रेजों के बंग-भंग के षड़यंत्र का भंडाफोड़ करने और कश्मीर की समस्या के दूरगामी दुःखद परिणामों से जन-जन को अवगत कराने के लिए देश उनका सदैव आभारी रहेगा।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग के विकास भवन में निर्मित डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी सभागृह के लोकार्पण कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने भारत माता के चित्र पर पुष्प अर्पित किए और डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के चित्र पर माल्यार्पण किया। उल्लेखनीय है कि डॉ. मुखर्जी की आज जयंती है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने उनकी स्मृति में विकास भवन में मंत्रोच्चार के बीच पौध-रोपण किया तथा शिलापट्टिका का अनावरण कर सभागृह का लोकार्पण किया। उन्होंने सभागृह में

निर्मित डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के चित्र का भी अनावरण किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता पंचायत एवं ग्रामीण विकास व श्रम मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल ने की।

प्रधानमंत्री के दृढ़-संकल्प ने देश को धारा-370 से दिलाई मुक्ति- मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि डॉ. मुखर्जी का 33 साल की आयु में वाइस चांसलर बनना उनकी प्रतिभा को दर्शाता है। उनके द्वारा कश्मीर समस्या की ओर ध्यान आकर्षित करने के बाद भी देश में धारा-370 का कलंक जारी रहा एवं 40 हजार निरपराध लोग पीड़ा और हिंसा के शिकार हुए। अंततः प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के दृढ़-संकल्प ने देश को धारा-370 से मुक्ति प्रदान की। डॉ. मुखर्जी और पंडित दीनदयाल उपाध्याय की रहस्यमी परिस्थितियों में हुई मृत्यु देश के लिए खेद का कारण है। उन्होंने कहा कि प्रदेश की विकास दर में निरंतर सुधार हो रहा है। ग्रामीण विकास गतिविधियों तथा पंचायतों की कार्य-प्रणाली से ग्रामीण क्षेत्रों में प्रगति स्पष्ट परिलक्षित हो रही है। विकास भवन में बना डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी सभागृह पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग के लिए उपयोगी सिद्ध होगा।

देश को चितरंजन रेल कारखाना डॉ. मुखर्जी की देन - मंत्री श्री पटेल

पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल ने कहा कि डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी द्वारा कश्मीर की समस्या के संबंध में देश का ध्यान आकर्षित करने और धारा-370 हटाने की मांग से कई युवा देश सेवा के लिए आगे आए। उनके बलिदान के परिणाम स्वरूप ही धारा-370 हटाने का मार्ग प्रशस्त हुआ।पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग के विकास भवन में निर्मित सभागृह का नामकरण डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के नाम पर किया गया है। सभागृह में लगभग 450 व्यक्तियों की बैठक व्यवस्था है। कार्यक्रम में पंचायत एवं ग्रामीण विकास राज्यमंत्री श्रीमती राधा सिंह, नगरीय विकास एवं आवास राज्यमंत्री श्रीमती प्रतिमा बागरी, सांसद श्री वी.डी. शर्मा, श्री आलोक शर्मा, जन-प्रतिनिधि और नागरिक उपस्थित रहे।

सिमी आतंकियों के एनकाउंटर का बदला लेना चाहता था फैजान

कश्मीर-पठानकोट के आर्मी एरिया की रेकी कर चुका था; तीन साल में 14 बार ऐसा किया

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश एटीएस (एंटी टेररिज्म स्क्वॉड) ने खंडवा से प्रतिबंधित आतंकी संगठन इंडियन मुजाहिदीन (आईएम) के संदेही फैजान शेख को गिरफ्तार किया। आरोपी पांच दिन की रिमांड पर है। पूछताछ में फैजान ने बताया कि वह सिमी के आठ आतंकियों के एनकाउंटर का बदला लेना चाहता था।

फैजान ने एटीएस से कहा कि उसका एक ही मकसद था, सुरक्षा बल और उनके परिजन को नुकसान पहुंचाना। इसके लिए कश्मीर, पठानकोट, मुंबई और दिल्ली में सुरक्षा बल के ठिकानों की रेकी कर चुका था। पिछले तीन साल में 14 बार इन शहरों में आर्मी एरिया की रेकी की है।

पकड़े जाने या जान जाने का नहीं था डर- फैजान ने खुलासा किया है कि बदला लेने की नीयत से लोन वूल्फ अटैक प्लान कर रहा था। इसके लिए पिस्टल और कारतूस भी खरीदे। उसने एटीएस अधिकारियों से साफ कहा, एक भी सुरक्षा बल को नुकसान पहुंचाने में कामयाब हो जाता, तो खुद को खुशनसीब मानता। उसे पकड़े जाने या जान जाने की फिक्र नहीं थी।

मातम में बदली बच्चे के जन्म की खुशी

गाय को बचाने में पलटा ऑटो, फिर 100 मीटर तक ट्रेलर ने घसीटा

- **4 लोगों की मौत, 2 गंभीर घायल**

शहडोल (नप्र)। नेशनल हाईवे 43 पर शुक्रवार रात एक भीषण सड़क हादसा हो गया। इस हादसे में एक ही परिवार के 4 लोगों की मौत हो गई है, वहीं 2 गंभीर रूप से घायल हैं। मृतकों में मां और 2 बेटी समेत एक अन्य रिश्तेदार शामिल हैं। सड़क हादसा शहडोल अमलाई मार्ग पर पकरिया गांव के समीप हुआ है। हादसे के बाद ट्रेलर ने लगभग 100 मीटर ऑटो को अपने साथ हाईवे पर घसीटा।

बुढ़ार थाना प्रभारी संजय जायसवाल ने बताया कि धनपुरी नंबर 3 में रहने वाला असवार परिवार ऑटो में सवार होकर जिला अस्पताल से लौट रहा था, तभी अचानक हाईवे पर मवेशी आ गए, उन्हें बचाने के प्रयास में ऑटो हाईवे पर ही पलट गया। तभी अचानक सामने से एक भारी भरकम ट्रेलर वाहन आ गया। उसने सड़क पर पड़े ऑटो सवार लोगों को कुचल दिया।

हादसे में 2 महिलाओं के मौके पर ही मौत- टीआई संजय जायसवाल ने बताया कि हादसे में 2 महिलाओं के मौके पर ही मौत हो गई। इनमें रोशनी असवार पति मुज्जु असवार (40), ममता असवार पिता मुज्जू असवार (15) के नाम शामिल हैं। वहीं रिया असवार पिता मुज्जू असवार (12) और बिट्टू पिता हरिश्चंद्र (30) ने अस्पताल जाते समय दम तोड़ दिया। जबकि ऑटो चालक कुंज बिहारी त्रिपाठी पिता गोविंद त्रिपाठी (28) और नेमचंद्र पिता हरिश्चंद्र (35) गंभीर रूप से घायल हैं जिनका उपचार मेडिकल कॉलेज में जारी है।

प्रत्यक्षदर्शी ने बताया ऑटो पलटते ही ट्रेलर ने रौंदा, 100 मीटर घसीटते रहे- घटना स्थल पर मौजूद नितिन पांडेय ने बताया कि हम लोग हाईवे के पास ही थे। शहडोल की तरफ से एक ऑटो आ रहा था, हाईवे पर कुछ मवेशी थे, उन्हें बचाने के फिराक में ऑटो हाईवे पर ही पलट गया। जैसे ही ऑटो पलटा तभी सामने से तेज रफ्तार वाहन ट्रेलर (ट्रक) आ गया। पलटे ऑटो से सड़क पर पड़े लोगों को रौंदते हुए ट्रेलर करीब 100 मीटर उन्हें घसीटते हुए ले गया। तब तक चीत्कार सुनाई देने लगा। हम लोग दौड़े, घायलों को बाहर निकालने लगे लेकिन 2 की मौके पर ही मौत हो चुकी थी।

नवजात को देखने गया था परिवार- पुलिस ने बताया कि पीड़ित परिवार शुक्रवार की रात 10 बजे के लगभग जिला अस्पताल से अपने घर धनपुरी नंबर 3 के लिए लौट रहे थे। उनके परिवार में एक बच्ची का जन्म हुआ था उसे देखने सभी ऑटो में सवार होकर जिला अस्पताल गए थे। पुलिस ने बताया कि सभी लोग आपस में रिश्तेदार हैं।

एसईसीएल में नौकरी करती थी रोशनी- पुलिस ने बताया कि मृतिका रोशनी असवार पिता मुज्जू एसईसीएल के सेंट्रल अस्पताल में नौकरी करती थी। वह अपनी 2 बेटियों के साथ जिला अस्पताल परिवार में आए नवजात को देखने गई थी। इस हादसे में रोशनी और उनकी 2 बेटियों की मौत हो गई।

फरार चालक पर 30 हजार का इनाम- घटना की सूचना मिलते ही देर रात मौके पर जोन के एडीजीपी डीसी सागर, एसपी कुमार प्रतीक समेत अन्य अधिकारी पहुंच गए थे। रेस्क्यू के बाद पुलिस ने ट्रेलर वाहन को जब्त कर लिया है। वहीं फरार चालक की गिरफ्तारी के लिए एडीजीपी ने 30 हजार रुपए की घोषणा की है।

पुस्तक समीक्षा

रामगोपाल तिवारी 'भावुक'
(साहित्यकार और समीक्षक)

भारत रत्न पं. रविशंकर : नव्यता के नायक

भारतीय वांग्मय में शास्त्रीय संगीत एक धरोहर के रूप में रहा है। इसके बारे में सामान्य जनों को जानकारी कम ही रही है। इसे सुनना और सुनकर समझना जितना कठिन है, उतना ही इसके बारे में जानकारी एकत्रित करना। प्रस्तुत पुस्तक के लेखक दिनेश पाठक को इस विषय पर कार्य करते समय कितनी तैयारी करना पड़ी होगी ,इस बात का प्रमाण, इस कृति पर दृष्टि डालने से ही मिल जाता है।

मध्य प्रदेश साहित्य अकादमी द्वारा कथेतर (जीवनी) श्रेणी में,राष्ट्रीय विष्णु प्रभाकर कृति सम्मान से पुरुस्कृत इस पुस्तक का मुख्य आधार लेखक ने पं.रविशंकर से हुई उनकी तीन चार विस्तृत मुलाकातों को बनाया है। दौरान पंडित जी ने अपने जीवन के विभिन्न दौरों की चर्चा विस्तार से की और जिनके ज़रिए पुस्तक सितार सम्राट की प्रामाणिक जीवन गाथा बन गई। इसके अतिरिक्त उन्होंने पुस्तक के निमित्त शास्त्रीय संगीत के उन जाने माने साधकों से भी सम्पर्क साधा जो भारत रत्न पंडित रविशंकर की आधी सदी से अधिक की सांगीतिक सक्रियता के दौरान उनके निकट संपर्क में रहे। उनके साथ कार्य अनुभवों को साझा करके लेखक ने एक शोध पूर्ण कृति की रचना कर डाली है। 'शाश्वत सितार' में दिनेश पाठक जी लिखते हैं कि पंडित रविशंकर बेबाकी से यह स्वीकार करते थे कि उन्होंने भारतीय शास्त्रीय संगीत में काफी कुछ नया करने का प्रयास किया और वे कहते थे 'हमें परिवर्तन से डरना नहीं चाहिए। पिछली शताब्दी में हमारा संगीत तीव्र गति से विकसित हुआ है और परिवर्तन इसका एक अनिवार्य घटक रहा हैं निश्चित रूप से मैं अपने समय के आगे जाकर विचार करता था।यह बात पुस्तक के शीर्षक की की प्रासंगिकता को स्वमेव सिद्ध करती है।

छन्द बद्ध रचना में काम करते समय तक उसके नियमों को तोड़ने का हम साहस नहीं जुटा पाते फिर शास्त्रीय संगीत में कुछ नये प्रयोग करना तो बहुत ही दुस्कर कार्य है। जिसे पण्डित रविशंकर ने कर दिखाया है।दरअसल नवीन प्रयोग यदि शुद्ध शास्त्रीय संगीत की नींव पर आधारित होते हैं तो यह शीघ्र ही परम्परा के अंग बन जाते हैं, इसी वजह से हमारा संगीत आज तक जीवित है, जड़ नहीं हुआ जैसा कि बहुत कुछ पुरानी संस्कृतियों के साथ हुआ है।

दिनेश पाठक ने इस कृति को दो तरह से विस्तार दिया है। एक पंडित रविशंकर के शब्दों में आत्मकथ्य शैली के रूप में हमारे सामने हैं। दूसरे उनके सहयोगियों, विख्यात संगीत समीक्षकों एवं श्रोताओं के कथन के रूप में जो समीक्षात्मक रूप में लिपिबद्ध है,ताकि हम सब रविशंकर जी के जीवन के हर एक पहलू से रू-ब-रू हो सकें। लेखक पंडित रविशंकर से पहली मुलाकात से ही अत्यधिक प्रभावित होकर बाद की हर मुलाकात में, उनके शब्दों को आत्मसात कर उनके द्वारा सुनाई अपनी जिन्दगी की किताब के पृष्ठों को सिलसिलेवार संजोने का काम करते रहे।

पुस्तक में रविशंकर के बचपन के उन संघर्षपूर्ण दिनों का मार्मिक चित्रण भी है जब उनके पिता श्याम चौधरी द्वारा राजस्थान की झालवाड़ रियासत की नौकरी छोड़कर विदेश चले गए और वहां एक विदेशी महिला से विवाह भी कर लिया। रवि की माँ हेमांगनी ने कुछ समय झालवाड़ रियासत द्वारा मिलने वाली पेंशन से गुजारा किया। लेकिन, बाद में वे अपने बेटों के साथ बनारस चली गईं। रवि पांच भाइयों में सबसे छोटे थे। माँ को मिलने वाली पेंशन इन तक आते आते दो सौ रुपये के स्थान पर साठ रुपये रह जाती थी जिसमें इतने बड़े परिवार को चलाना बहुत कठिन था। बनारस में रवि का अध्ययन पांच वर्ष की उम्र में ही शुरू हो गया था बाद में वे बड़े भाई उदयशंकर के डांस ट्रूप के साथ यूरोप भ्रमण पर चले गए इसी दौरान उनकी भेंट उस्ताद अल्लाउद्दीन खां से हुई जिनके सानिध्य ने उनकी जीवन धारा में आमूलचूल परिवर्तन कर दिया।

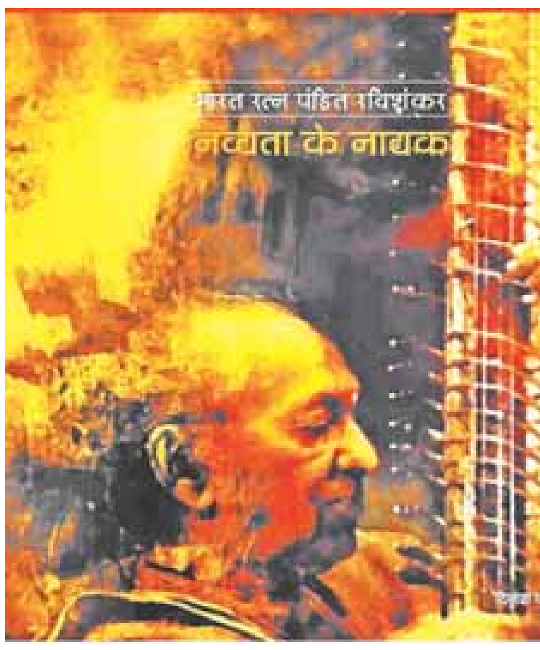

पंडित रविशंकर ने अपने गुरुदेव अलाउद्दीन खाँ के बारे में बताया कि -'बाबा के भीतर छंद और लय का बोध बड़ा अचरज भरा था।साथ ही वे लोकतत्व में भी गहरा दखल रखते थे। बाबा का शिश्वत ग्रहण करने के बाद रवि बाबा के पास मध्यप्रदेश चले गए और मध्य प्रदेश के उस छोटे से कस्बे मैहर में रविशंकर ने अपने जीवन के सात महत्वपूर्ण वर्ष,बाबा के पुत्र अली अकबर और पुत्री अन्नपूर्णा के साथ संगीत सीखते हुए बिताये। सितार और सुरबहार पर स्वर साधना का कठिनतम अभ्यास करते हुए रविशंकर ने विभिन्न रागों और शैलियों पर महारत हासिल कर ली।

मैहर में बाबा अलाउद्दीन की पुत्री अन्नपूर्णा से इनकी नजदीकियां विवाह में परिणत हो गईं। अन्नपूर्णा ने हिन्दू धर्म स्वीकार कर लिया। आर्य समाज की पद्धति के अनुसार विवाह कर लिया। लेकिन, विवाह के बाद भी पंडित रविशंकर के जीवन में एक के बाद एक महिलाएं आती रहीं। अंततः इनके जीवन की बागडोर सुकन्या जी ने सम्हाली और इन दोनों की पुत्री अनुष्का भी सितार वादन के क्षेत्र में सक्रिय हैं। पुस्तक की एक और विशेषता है,स्वर कोकिला भारत रत्न लता मंगेशकर जी का संदेश और रविशंकर जी के बारे में दिनेश जी से साझा की गई ढेर सारी यादें,उन्होंने कहा रविशंकर भारत रत्न तो थे ही लेकिन मैं ऐसा सोचती हूँ कि वे विश्व रत्न थे। उन्होंने सारी दुनिया में भारत का नाम किया था।वह सदा याद किये जायेंगे, जब कभी हम संगीत का नाम लेंगे उनका नाम उल्लेखित किया जायेगा।

भारत में बहुत से आलोचक यह मानते हैं कि पंडित रविशंकर अमेरिकी दौलत का आकर्षण नहीं रोक पाये और उन्होंने अपने आप को बेच दिया। जबकि रविशंकर का लेखक से कहना यह था कि मैं चाहता तो अरबपति हो सकता था, मुझे एक गेरुआ वस्त्र धारी स्वामी और एक संगीतज्ञ के मिले- जुले राग रॉक संगीत का राजा बनने के पूरे अवसर मिल रहे थे। लेकिन, मैंने सदैव भारतीय संगीत को विश्व में उसका उचित स्थान दिलाने का प्रयास ही किया।

लेखक ने पुस्तक को समृद्ध करने के लिए रविशंकर के शिष्यों के अपने गुरु के संबंध में उद्गारों को भी सम्मिलित किया है। मिसाल के तौर पर,शहनाई वादक दयाशंकर बताते हैं कि गंडा बंधन में पंडितजी अपने शिष्यों से चांदी का केवल एक रुपया लेते थे और शिष्यों को स्टाइपेंड़ भी देते थे। रविशंकर के शिष्य, सितार वादक गौरव मजूमदार बताते हैं-'आपको जानकर हैरत होगी कि रविशंकर ने अपने गुरु बाबा अलाउद्दीन खाँ की तरह कभी भी किसी विद्यार्थी से शिक्षा देने के नाम पर कोई पैसा नहीं लिया।,बल्कि उनके घर पर रहना, खाना-पीना और सारा इंतजाम पंडित जी स्वयं वहन करते थे।पण्डित जी के प्रिय शिष्यों में से एक प्रसिद्ध मोहन वीणा वादक पंडित विश्व मोहन भट्ट पुस्तक में कहते है कि वे मेरे लिए मात्र एक पाठ्यक्रम सिखाने वाले गुरु ही नहीं वरन जीवन की कई बारीक चीजों को समझाने वाले मार्गदर्शक भी थे।

कुछ संगीत समीक्षकों की टिप्पणी, कि वे पश्चिम में कोई भी राग आधे घंटे से अधिक नहीं बजाते हैं का जवाब देते हुए पंडित रविशंकर ने लेखक को बताया कि संगीत में समय का विस्तार महत्वपूर्ण नहीं है क्योंकि हमारा संगीत लिखित नहीं होता। अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त गायक पंडित विद्याधर व्यास ने पंडित रविशंकर के बारे में कहा कि उनका रागों का चयन और वादन बहुत नपा-तुला था। लयकारी, तिहाईयाँ और सवाल- जवाब का भरपूर उपयोग उन्होंने किया और खूब तालियां बटोरीं।वरिष्ठ संगीत समीक्षक और लेखक डॉ. मुकेश गर्ग का मानना है कि ऐसी बहुत सारी बातें हैं जो पण्डित रविशंकर के प्रगतिशील नजरिये को उजागर करती हैं। उदाहरण के लिये राग से किसी रस विशेष को जोड़ना भी, वे ठीक नहीं समझते थे।

रविशंकर के व्यक्तित्व के अनजाने पहलुओं का उल्लेख लेखक ने वर्षों उनके साथ प्रस्तुति संगत देने वाले कलाकारों के हवाले से करते हुए लिखा है, 'समयकी पाबन्दी कोई उनसे सीखे, कार्यक्रम में जितना समय निर्धारित उतना ही बजाना। निश्चित समय पर सोना, जागना,ब्रेक फास्ट लंच डिनर और किसी से भी मुलाकात का समय निश्चित,हमने इतना अनुशासित संगीतकार दूसरा कोई नहीं देखा। ओशो ने भी एक स्थान पर लिखा है कि रविशंकर अपने समकालीन संगीतज्ञों की तुलना में इसलिए अधिक सराहे गए। क्योंकि वे सभी पूर्वाग्रहों को ताक में रखकर नव्यता के आग्रह को स्वीकार कर लेते थे।कदाचित भारत रत्न पंडित रविशंकर अपनी इसी विशेषता के कारण नवय्यता के नायक कहलाए। 11 दिसंबर 2012 को 92 वर्ष की अवस्था में सितार के इस जादूगर का निधन हो गया। मृत्यु से कुछ माह पूर्व उन्होंने ऑक्सीजन नली लगाकर अपने जीवन की आखिरी पब्लिक परफॉर्मेंस दी थी,यह उनके जुझारू व्यक्तित्व का सबसे बड़ा प्रतीक था।

प्रख्यात शास्त्रीय गायक पंडित जसराज ने रविशंकर के अवसान पर कहा था पंडित जी राष्ट्रीय विरासत थे।उन्होंने संगीत और उसके भविष्य के लिये जो किया वही उनकी पहचान है। उनका सबसे बड़ा योगदान, भारतीय संगीत को अन्तर्राष्टीय पटल पर ले जाना और स्थापित करना था। रविशंकर ने जीवन को भरपूर जिया। नौ दशक लम्बी जीवन सभा, सम्पूर्ण संसार में विस्तारित सभा, अविस्मरणीय सभा इस संगीतमय जीवन सभा के मर्म में थी सितार सम्राट की स्वीकारोक्ति। संगीत सिर्फ संगीत होता है उसका अच्छा या बुरा होना असल में व्यक्ति अपनी आयु , अनुभव, ज्ञान और पृष्ठभूमि के आधार पर तय करता है।

कृति - भारत रत्न पंडित रविशंकर - नव्यता के नायक
लेखक - दिनेश पाठक
प्रकाशक - संचालक, संस्कृति संचालनालय, मध्यप्रदेश भोपाल
समीक्षक - रामगोपाल भावुक

कविता

बरसात इक आरज़ू

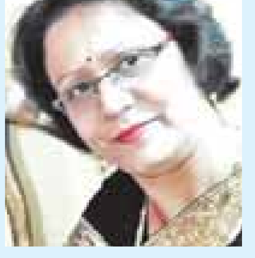

सीमा जोशी

बरसात की
इक बूंद भर से
खिल उठती है क़ायनात !

आरज़ू तो
महलों अट्टालिकाओं की
होती है
बरसे... और तेज बरसे मेघा।

वहीं
इक फ़िक्र
इक सिहरन
इक ख़ौफ से
सहमी सी झोंपड़ी
भूल जाती है
गयी दफे की बरसात को
और
स्वागत करती है
नई बरसात की।

इस इबादत के साथ ...
अबके
ना रहे कोई तिश्ननगी बाक़ी।

व्यंग्य

राकेश सोहम्
लेखक व्यंग्यकार हैं।

चरण दो और उन्हें छूने वाले हाथ अनेक

हाल ही में एक बड़ी दुखद खबर सुनने में आई कि चरण छूने के फेर में भारी गड़बड़ी हो गई। चरण दो ही थे और उन्हें छूने वाले हाथ अनेक। समीकरण, नेता एक और वोटर अनेक के जैसा हो गया था। सभी को वही चरण चाहिए थे। होड़ लग गई। हड़बड़ी में गड़बड़ी हो गई। लोग एक दूसरे के चरणों में गिरने लगे। भगदड़ मच गई। बेचारे कुछ बदकिस्मत अपनों के ही चरणों के नीचे आ गए और जान गवां बैठे!

चरणों के फेर भी बड़े अजीब होते हैं। जनकलाल के एक रिश्तेदार हैं। वे पूरे जीवन भर उनसे नाराज रहे। जनकलाल हमेशा उनके चरण छूते थे। रिश्तेदार चाहे जब उनके घर आते-जाते रहते थे और वे हर बार उनके चरण छूते थे। एक बार उन्होंने उनके चरण नहीं छुए। रिश्तेदार नाराज हो गए। दरअसल, एक बार उनके रिश्तेदार उन्हें एक मेले में मिल गए थे। जनकलाल, हमेशा की तरह फौरन उनके चरणों में झुक गए। रिश्तेदार ने गदगद होकर उनकी पीठ थपथपाई और ढेर सारा आशीर्वाद दिया। रिश्तेदार के विदा होने के बाद जनकलाल कमर सीधी करके खड़े हुए तो देखा उनकी पीछे की जेब में रखा पर्स गायब है! किसी ने उनकी पॉकेट मार दी थी! वे बहुत दुखी हुए।

अगले रोज जनकलाल के वही रिश्तेदार दोबारा मेले में मिल गए। इस बार उन्होंने उनके चरण नहीं छुए। जनकलाल डरे हुए थे। मेले की धक्का-मुक्की में कोई फिर से उनकी पॉकेट ना मार दे इसलिए। रिश्तेदार के दिल को ठेस पहुंची और वे नाराज हो गए। उन्होंने जनकलाल के घर पर आना-जाना बिल्कुल बंद कर दिया। जनकलाल मौके की तलाश में थे। वे नाराज रिश्तेदार के चरण छूकर मामला सुलटाना चाहता थे, लेकिन यह संभव ना हो सका। दरअसल उस वाकये के बाद, नाराज रिश्तेदार उनके घर कदम नहीं रखा। उनसे जितने बार सामना हुआ बाजार-हाट में ही हुआ और जनकलाल अपने पर्स की चिंता में उनके चरण छूने से बचते रहे।

वैसे चरणों की महिमा अनंत है। एक मोहल्ले का गुण्डा-मवाली, भलीराम के घर आकर अकसर लोट लगाता था, उनके चरण छूता और वोट माँगता था। जब से वह नेता बन गया है भलीराम अपनी समस्याओं को लेकर जाते हैं, उसके चरण छूते हैं और वह मुंह फेर लेता है। हालांकि अब चरण छूने का समय जा रहा है। लोग सामने वाले के घुटने छूते हैं। इससे एक फायदा यह है कि चरण छूने वाले को अधिक झुकना नहीं पड़ता। सुना तो यह भी जा रहा है कि आदमी का दिमाग आजकल घुटनों में रहने लगा है।

पौराणिक उल्लेख है कि चरण छूना अच्छा है। ऐसा करने से विनम्रता आती है और चेतना जागती है, लेकिन ऐसा देखने में नहीं आ रहा है। चेतना की बजाए अंधभक्ति, अंधविश्वास, उतावलापन और उग्रता बढ़ रही है। इसलिए बिना चेतना के किसी के घुटने छुओ या फिर चरण, सब बेकार ही है।

टी-20 फाइनल : कुछ दोहे

ओम वर्मा

याद रहोगे तुम सदा, रोहित और विराट।
करते आए हो खड़ी, प्रतिद्वंद्वी की खाट॥

सही समय पर ले लिया, दोनों ने संन्यास।
अगर न होते फ़ॉर्म में, करते सब उपहास॥

जैसे सूर्यकुमार ने, लिया मिलर का कैच।
मिला नहीं रेकार्ड में, उसके जैसा मैच॥

अर्शदीप अब अर्श पर, चमके हैं बुमराह।
बना रहे अब टीम में, ऐसा ही उत्साह॥

वक्रोक्ति

सुधीर देशपांडे

एक कवि की डायरी

वैसे किसी की डायरी को पढ़ना अच्छी बात नहीं मानी जाती। पर आदमी का क्या ! उसे जिस काम के लिए मना करो वहीं काम करने में आनंद आता है। जिस दिन से प्रधानमंत्री ने देश में स्वच्छता का नारा दिया कुछ लोगों ने अपने घर पर झाड़ू लगाना ही बंद कर दी। वे आज भी वहीं लघुशंका करते हैं जहॉ स्पष्ट अक्षरों में इसे करने के लिए मना किया गया है। घरों में शौचालय तो बने हैं पर दादा से लेकर बच्चों तक आज भी बेर के झाड़ के नीचे या खुले मैदान में ही शौच को जाते हैं। उधर पुल पर पानी होने की स्थिति में वाहन न निकालने की चेतावनी उन्हें चुनौती लगती है। नो पार्किंग झोन में गाड़ी खड़ी ही इसलिए की जाती है कि देखें आखिर ऐसा करने से होता क्या है? दो सवारियो के ही गाड़ी पर बैठने का नियम है पर तुम्हारी बला से। ये बात अलग है कि हम अपनी गाडी़ पकड़े जाने पर अपने बड़े संबंधो की दुहाई भी देते दिख जाते हैं। नियम तोड़ने के लिए ही बनाए जाते हैं। लोग वर्जनाओं को सहज स्वीकार नहीं करते।

डायरी के बारे में भी कुछ ऐसा ही है। वैसे कवि का आग्रह था कि इस डायरी को कोई हाथ न लगाए। अब किसी कवि की डायरी से आखिर दूसरे को मतलब क्या कि वे उसे पढ़े। किसे नहीं पता कि एक कवि की डायरी में कविताओं के अलावा और कुछ होता भी नहीं। वह ऐसी हस्ती भी नहीं कि आयकर वाले पहले आकर उसकी डायरी को जब्त कर ले और हवाला से उसके तार जोड़ दे। रिश्वत और काली कमाई के कमीशन के राज जाने। जिसकी डायरी को उसके घर में ही इज्जत की नजर से न देखा जाता हो उसके बारे में आपकी उम्मीद हो ही क्या सकती है। पर नहीं साहब जब से कवि ने घोषणा की कि उनकी डायरी को कोई हाथ नहीं लगाएगा। हर व्यक्ति की इच्छा उस डायरी को एक बार खोल कर देखने भर की हो गई है। आखिर ऐसा है क्या डायरी में। ये किस्सा बिल्कुल सामने जाती हुई किसी लड़की सा हो गया जिसे देखने के लिए मनचले तेज कदमों से आगे बढ़ते हैं। उनकी रूचि तो केवल इसमें होती है कि आखिर वह लड़की दिखती कैसी है। पत्नी को सबसे बड़ी चिंता थी कि जिस आदमी ने आज तक किसी को अपनी डायरी देखने को मना नहीं किया वो आज ही क्यों ऐसी बात कर रहा है। जरूर कोई बात है। न जाने किसी और कवियत्री से इनके संबंध तो नहीं हो गए। कही किसी कवि सम्मेलन में ज्यादा पैसा मिला हो और ये मुझे न बता रहे हो। या और कुछ। इस बात को बताने का आपको कोई लाभ नहीं कि इस कारण पिछले आठ दिनों से दोनों में बोलचाल पूरी तरह बंद है। अब आप ये मत समझिए कि भाभीजी से मिलकर या उनको और भडकाकर इस डायरी का राज पता कर सकते है और ये भी मत समझिए कि बोलचाल बंद करने से पहले उनमें कोई बातचीत नहीं हुई होगी।

दोस्तों को भी कवि पर शंका होने लगी है। आखिर डायरी में ऐसा क्या लिख दिया होगा उसने। वे लोग जेम्स बॉण्ड को ही इस खुलासे के लिए हायर करने का सोच रहे हैं। कुछ लोग देश की ही सीबीआई को ही इस काम को सौपने का आग्रह कर रहे हैं पर उसके काम और उसकी गति को देखकर जेम्स बॉण्ड को ही नियुक्त करने का मन बना रहे हैं।

कवि बड़ा कवि है। दूसरा उसे मानता हो न हो पर वह खुद को बड़ा तो जरूर मानता हैं। इसके लिए वह सारे तामझाम तैयार रखता है। दूसरा न माने इससे क्या। भारत का नागरिक होने के नाते कम से कम ये हर साहित्यकार का अधिकार तो बनता है कि अपने आप को दुनिया का अद्वितीय व्यक्ति कहें और यह भी कि उसकी रचना अद्वितीय ही है। हर रात को अपने बिस्तर पर जाने के पहले वह कुछ लोगों को फोन करता है। डायरी में नोट करता है कुछ। वह दिखा दिखा कर नोट करता है। वह डायरी का जिक्र करता है। वह बताता है कि इस डायरी का महत्व उसके लिए क्या है। यह स्वीकार करने में हमें भी कोई हर्ज नहीं कि डायरी उसका जीवन है। जब भी वह किसी भी कार्यक्रम में जाता है तो डायरी ही उसका हमसफर हमराज और हमदर्द होती है। वह मना करता है कि कोई डायरी को हाथ भी नहीं लगाएगा। वैसे यह भी कहा गया कि उनकी डायरी के कुल चार पेज ही महत्वपूर्ण है। जिन पर बातचीत हो सकती है। जो काफी कुछ भेद खोलने में समर्थ है। अब कवि के पास साहित्यसेवा के फलस्वरूप संपर्क मे आने वाले लोगों के अलावा किसी और की क्या कहानी हो सकती है पर कभी कभी ये कहानियॉ भी बड़े भूचाल लाने में सहायक हो जाती हैं। इस आशंका के कारण भी कई लोग अब इस डायरी के उन चार पन्नों के बारे में जानने का भरपूर प्रयास कर रहे हैं। बच्चों की हालत और खराब है। बाबूजी ने आखिर ऐसा कहा ही क्यों कि कोई उनकी डायरी नहीं देखेगा।

सही तो है आज तक बाबूजी ने डायरी के बारे में ऐसी निषेधाज्ञा जारी ही नहीं की थी। सौ किताबों के लिए जितनी रचनाएं जिस टेबल पर और जिन डायरियों में जन्मी थी उनके बारे में कभी प्रतिबंध नहीं लगा। आतिथ्य या अध्यक्षता हो या कविता पाठ का आमंत्रण या फीस की जानकारी कवि ने अपने बच्चों को ही इन सब कामों के लिए अधिकृत कर रखा था। पुरस्कार वापसी के चक्कर में भी बच्चों को शंका हो रही है कि कहीं पिताजी ने भी अपनी डायरी में ऐसा कोई संकल्प न लिया हो कि वे दूसरों को प्रसिद्धी पाते देख बड़ी मेहनत से जुगाडे गए एकमात्र पुरस्कार की वापसी की घोषणा न लिख बैठे हों। अन्यथा कवि है, भावावेश में ऐसा कोई फैसला ले लें और विनाकारण बवाल खड़ा हो जाए। कभी कभी ऐसा भी हो जाता है। आखिर कवि और प्रसिद्धि में जो संबंध है वह जगजाहिर है। मुझे पता है आप लोगों का धैर्य भी डायरी के उन पन्नों में आखिर है क्या जानने के लिए टूटता सा दिखाई दे रहा है। किसी भी बात की इतनी लम्बी भूमिका आखिर होनी भी नहीं चाहिए। पर क्या करें आज की तारीख में कवि की यह डायरी प्रमुख मसला है। देश के तमाम साहित्यकार इन पर अपनी नजर गड़ाए बैठे हैं कि आखिर ऊँट किस करवट बैठेगा। आज देश की बड़ी बड़ी समस्याएं उतना महत्व नहीं रखती। महंगाई, आतंकवाद, राष्ट्रीय सुरक्षा, एफडीआई, नौकरी डिजीटल इंडिया जैसे मसले कोई मायने नहीं रखते। वाट्स अप और फेसबुक पर भी कवि के उस निर्णय पर पक्ष और विपक्ष में पोस्ट डल रही है। उस स्वनामधन्य कवि की यह घोषणा ही सर्वोपरि है कि मेरी डायरी को कोई हाथ नहीं लगाएगा। अब इसके आगे आपको क्या चाहिए। मुद्दा छोड़ दें पर पिछले आठ ही दिन से प्रत्येक अखबार का संवाददाता भी यह जानने में लगा हुआ है कि आखिर उस डायरी में है क्या। टीवी चैनल लगातार कयास पर कयास लगाए जा रहे हैं कि उस डायरी में ऐसा क्या है जो वह कवि बता नहीं रहा है। बहस पर बहस हो रही है. बहस में भाग लेने वाले वे उसे राष्ट्रीय मुद्दे की तरह ही आगे बढ़ा रहे हैं। उनके कयास भी बड़ी दूर की कौडी लाते दिखाई दे रहे हैं, अच्छी टीआरपी मिल रही है। मतलब सध रहा है कवि का भी, चैनलों का भी। इसकी आड में कुछ लोगों का और।

उस दिन मेरे पूछने पर भी वे बोले - आखिर मेरी डायरी को हाथ लगाने का मन में विचार भी क्यों आना चाहिए भले ही वह मेरी बीवी या बच्चे ही क्यों न हो। यह कोई उनके बाप दादों की विरासत तो नहीं कि वे जब चाहे इस पर अपना दावा करें। यह मेरी अपनी निजी सम्पत्ति है जिस पर मेरा और सिर्फ मेरा अधिकार है।

अरे आप भी बड़े पक्के हैं। आप अब भी यह जानना चाहते हैं कि उन डायरी के पन्नों में ऐसा क्या है। इतना कुछ जानने के बाद भी आप इस सारे तामझाम को जाने बगैर नहीं जाना चाहते। ये जानते हुए भी कि किसी की डायरी पढ़ना अच्छी बात नहीं है।

चलिए आपकी जिज्ञासा का अंत कर ही दूँ। यह जानकारी कवि ने ही मुझे दी। बोले तुम तो जानते ही हो अब तक मैनें 5769 कविताएं लिखी, इतनी ही गजलें भी और इतने ही नवगीत भी, इतने ही दोहे भी मैने लिखे। इसे वर्ल्ड़ रेकार्ड में होना चाहिए। होना चाहिए कि नहीं चाहिए। मैंने हॉ कहा। वे आगे बोले मेरी हर साल दो के हिसाब से अब तक 100 किताबें छप चुकी है। उम्र साठ साल की है। मै छोटा मोटा साहित्यकार तो हूँ नहीं। पर ये घर की महिलाएं और बच्चे जरा समझते नहीं इन सब चीजों का महत्व। जिन डायरियों में मैंने अपना सम्पूर्ण सृजन कार्य किया उनका कोई महत्व उन्होने नहीं समझा। दीवाली की स्वच्छता के चक्कर में घर का कबाड निकाल दिया और उसी में मेरी 100 डायरियॉ भी रद्दी के भाव बेच दी। अब इनसे ये न कहूँ कि मेरी डायरी को हाथ मत लगाना तो आखिर क्या कहूँ। अब इसमें बुरा क्या है। पर आप ये तो पहले ही साफ कर सकते थे। इतना लफडा तो खड़ा नहीं होता। कर सकता था पर उन चैनलों के संवाददाताओं का क्या करूँ जो आधी रोटी पर दाल लेकर ही भाग जाते हैं। और उसके बाद सुनने के लिए तैयार ही नहीं होते। और वे मुस्कुरा दिए। कवि के भीतर की प्रसिद्धि की कामना जाग उठी थी। मैं उनकी चतुराई भॉप रहा था।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

संपादक - उमेश त्रिवेदी

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)

RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

कलाकार और मूर्तन-अमूर्तन के बीच का द्वंद्व

चंचल मन, पचपन में बचपन वाला स्वभाव, व्यवहार, हंसी-मजाक, खुल कर और खिलखिला कर अपनी और कृतियों की प्रस्तुति देना और बचपन के यादों के भरोसे आज भी एकदम आनंदमय दुनिया तैयार करना कलाकार के संवेदनशीलता को दर्शाता है,

शांत बैठ कर आसमान में मंडराते बादलों को देखना, गोते लगाना सपनों के अथाह सागर में, कुछ विशेष की तलाश में भटकते रहना जीवन भर और आनंद लेना जीवन का बस ऐसी ही दुनिया है बिपिन कुमार के कृतियों में जहां अमूर्तता अपने चरम पर होने के बावजूद कृतियां दर्शकों के पास से होकर गुजरती हैं। उनसे बात करते हुए भी आप मूर्तन और अमूर्तन के बीच झूलते हुए से अनुभव करेंगे। अपने सृजन से संबंधित कहानियों का खजाना है उनके पास जिसमें बस भटकते हुए लगातार यात्रा करने को जी चाहता है। उनसे जितनी भी बार मिलेंगे जीवन की एक नई परत के साथ वो आपके सामने होंगे और हर बार नये कैनवास पर नई पेंटिंग का सृजन समझ में आयेगा आपको। सघन और बिरल के बीच रेखाओं के लयात्मक परिवेश इनके कृतियों को विशेष बनाते हैं। सफेद सर्फेस का भी अलग आनंद है इनके यहां फिर चाहे कृतियों की बात हो या शब्दों की। कृतियों की अच्छी और स्पष्ट व्याख्या से आप और भी करीब पहुंच जाते हैं कृतियों के। इनका विजन एकदम स्पष्ट होता है। रंगों के धब्बे, रेखाओं के सधे हुए संयोजन से जानदार स्ट्रोक में तब्दील होकर एक ऐसे दुनिया का प्रतिनिधित्व करते हैं कि कृतियां बोल उठे, हालांकि कृतियों को आसान बनाने हेतु तमाम संघर्षों से दो चार भी होना होता है कलाकार को। बिपिन कुमार कहते हैं कि ÷जब आपके पास सफेद स्पेस आता है समस्या वहीं से शुरू हो जाती है कि मुझे रचना क्या है? चारों तरफ उजले परिवेश में आपकी उपस्थिति कहां और किस रूप में और कितनी मात्रा में हो ये भी मायने रखती है, ऐसे समय ऐसा प्रतीत होता है कि हमसे ज्यादा शायद ही कोई अनभिज्ञ होगा, उस समय लगता है कि मुझे कुछ नहीं आता, इस विशाल शून्य के बीच भरे पड़े विशाल भाव, विचार, ज्ञान सब कुछ शून्य हो जाता है और एक कलाकार होने के बाद भी मैं शून्य हो जाता हूं। हाथ पैर दिमाग सब सून्न हो जाता है, कृतियों हेतु बस तड़प होती है

लेकिन जैसे ही काम शुरू होता है सारी चीजें स्वत~ होने लगती हैं, रंग रेखा भाव विचार सब अपने अपने मार्ग स्वतः ही खोज लेते हैं÷। आप यथार्थ पर भी बहुत काम किये हैं पर अमूर्तता जस आनंद वहां नहीं प्राप्त कर पाने की वजह से अमूर्त ही रच रहे हैं। सपना क्रिकेटर बनने का था, पर सपना ही रह गया। स्कूली स्तर पर कला में हुई प्रतियोगिता में पुरस्कृत हो जाने के बाद रुझान कला की तरफ हो गया। गुरु लक्ष्मी नारायण नायक जी जिनकी पहचान विशेष जलरंगों के कारण रही के स्नेह और विश्वास के बदौलत पिताजी भी कला के क्षेत्र में भेजने हेतु राजी हो गये हालांकि आम धारणा के जैसे वो भी अपने पुत्र को डॉक्टर या इंजीनियर ही बनाना चाहते थे। आप पटना आर्ट कॉलेज के छात्र बन गये। लगातार अच्छा करने के प्रयास तथा

निरंतर अध्ययन के बल पर आप अपनी राह खुद तय कर रहे थे कि मास्टर हेतु आपका चयन कॉलेज ऑफ आर्ट दिल्ली में हो गया। भीड़, बाजार, पार्कों में जाकर लाइव स्टडी भी आपके दैनिक गतिविधियों में शुमार था। बढेरा में सामूहिक प्रदर्शनी, अखबार में इलेस्ट्रेटर की नौकरी बाद में गुड़गांव के एक कंपनी में क्रियेटिव आर्ट डायरेक्टर जैसे तमाम पदों पर चयन आपके काबिलियत को बखूबी बयां करते हैं। कला को पूरा समय ना दे पाने के बावजूद भी आप कला के ही होकर रहे। सामूहिक प्रदर्शनी में प्रतिभाग निरंतर बना रहा पर एकल प्रदर्शनी बहुत ही कम हो सकी। गायतोंडे, रामकुमार, रज़ा, खासतौर से भारतीय अमूर्त चित्रण के धनी कलाकारों से खुद को बहुत प्रभावित मानने वाले बिपिन कुमार आकारों में बंधना पसंद नहीं करते बल्कि खुले आकाश की चाह रखते हैं, बंधनों से मुक्त हो सृजन कर्म में रमें रहना चाहते हैं। बिना आकार के रंग भावहीन होता है, शब्दों में भी गति होती है, मौन का भी अपना एक भाव होता है, शब्द होता है जैसे गूढ़ रहस्यों को खुद में समेटे आप गूढ़ विषयों पर तूलिका चलाने से भी परहेज़ नहीं करते। 1987 में निर्मित व्हील ऑफ लाइफ श्रृंखला जहां कुत्तों के जीवनचर्या के माध्यम से कई रहस्यों को सुलझाने का प्रयास हुआ है तथा स्नेक (सर्प) जिसके नाम से भय फैल जाता है, में आप लय, रिदम, तेजी तथा मूवमेंट को खोजते हुए उस पर पूरी श्रृंखला तैयार करते हैं। आप कहते हैं कि मेरा मानना है कि मैं कैनवास पर जो भी रंग लगाता हूं वह एक सोसाइटी की तरह है जिनका अपना-अपना महत्व होता है, समाज में कुछ लोग उत्प्रेरक होते हैं, कुछ लोग उत्तेजक, कुछ लोग शांत होते हैं तो कुछ लोग सुलझे हुए बिल्कुल यही हाल कैनवास पर रंगों का भी होता है पर उन्हें बैलेंस करना भी हम कलाकारों का ही काम है। सभी माध्यम में समान रूप से काम करते रहने के बावजूद इन दिनों आप ऐक्रेलिक और ऑयल पेस्टल के कॉन्बिनेशन में खुद को ज्यादा सहज महसूस कर रहे हैं, आपके श्याम-स्वेत चित्र भी भावपूर्ण हैं। आकार में छोटे पर सशक्त काम के साथ ही आपके संग्रह में बड़े-बड़े काम भी है। सॉफ्ट पेस्टल का सहज प्रयोग देखते बनता है।

15 दिसंबर 1967 को बिहार के मुंगेर में जन्में बिपिन कुमार की कृतियां राष्ट्रीय ललित कला अकादमी, नई दिल्ली, भारत भवन, भोपाल (बिनाले), आइफेक्स, बोधगया (बिनाले) आदि जगहों पर प्रर्दशित एवं प्रशंसित रहीं साथ ही प्राइवेट संग्रहों में भी हैं। सन 2000 में हुए एक दुर्घटना से आप कई वर्षों तक कार्य नहीं कर सके, आपकी एक आंख भी जाती रही, हताशा के बादल सघन हो चुके थे पर तीव्र इच्छाशक्ति के बदौलत धीरे-धीरे ही सही बादल छंटे और आप अपने सृजनशीलता की तरफ लौट आए। अब आप पूरी तरह से कला के ही हो गये हैं।

धार्मिक पर्यटन

वीरेंद्र व्यास

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

प्राकृतिक सौंदर्य वाले छग में देवी आराधना के आस्था स्थल

आछत्तीसगढ़ राज्य में पहाड़ों, झरनों, नदियों, जंगलों आदि के रूप में प्राकृतिक सौंदर्य मौजूद हैं तो इस राज्य में विभिन्न देवी-देवताओं के प्राचीन मंदिर भी स्थित है। प्राकृतिक पर्यटन के अलावा छत्तीसगढ़ में सांस्कृतिक धरोहर और संस्कृति को देखने तथा देव दर्शन के लिए भी लोगों का आना-जाना बना रहता है। रामायण कालीन भी कई स्मृतियां इस राज्य से जुड़ी हुई हैं। इस राज्य की आराध्य देवी मानी जाने वाली दंतेश्वरी माता तथा बमलेश्वरी माता के मंदिर बहुत प्रसिद्ध हैं। इस राज्य की सांस्कृतिक एवं प्राकृतिक माता के स्वरूप का पर्याय छत्तीसगढ़ महतारी के प्रतीक के रूप में माना जाता है। इन्हें भारत माता की तर्ज पर पहनावा देते हुए हरी साड़ी में एवं सिर पर मुकुट धारण किए हुए छत्तीसगढ़ महतारी की मूर्तियां भी राज्य के विभिन्न नगरों एवं ग्रामों में स्थापित की गई हैं।

मुझे विगत दिनों छत्तीसगढ़ के राजनांदगांव, खैरागढ़ एवं डोंगरगढ़ आदि क्षेत्रों में भ्रमण का अवसर मिला। राजधानी रायपुर से सौ किलोमीटर दूर स्थित मां बमलेश्वरी मंदिर भी पहुंचा। यह मंदिर महाराष्ट, मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ तीनों राज्यों के सीमावर्ती क्षेत्र में डोंगरगढ़ नामक ऐतिहासिक नगर में ऊंची पर्वतमाला पर स्थित है।

स्थानीय लोग बताते हैं कि इस क्षेत्र को भगवदीय क्षेत्र माना जाता है। धारणा है कि भगवदीय क्षेत्र उस स्थान को कहते हैं जहां देवी देवताओं ने अपने भक्तों को साक्षात प्रकट होकर दर्शन दिए हों। मां बमलेश्वरी का यह मंदिर बमलेश्वरी पर्वत पर स्थित है। कहा जाता है कि कोई ढाई हजार वर्ष पूर्व इस क्षेत्र का नाम कामावती नगर था और यहां के राजा कामसेन के दरबार में एक प्रसिद्ध नर्तकी कामकंदला थी।

लोक कथाओं के अनुसार जबलपुर के समीप स्थित पुष्पावती नगरी के राजा गोविंदचंद बड़े शिव भक्त थे। उन्हें भगवान शिव ने वरदान स्वरुप एक पुत्र माधवानल दिया था जो कि संगीत सहित विभिन्न कलाओं में निपुण था। राजा कामसेन के दरबार में नृत्य संगीत के वार्षिक आयोजन में नृत्यांगना कामकंदला ने नृत्य तथा माधवानल ने संगीत का प्रदर्शन किया। माधवानल की संगीत कला से प्रसन्न होकर राजा कामसेन ने आभूषण व पुरस्कार भेंट किए गए। किंतु माधवानल ने नृत्य से प्रभावित व मोहित होकर राजा द्वारा दिए गए आभूषण व पुरस्कार नृत्यांगना कामकंदला को भेंट कर दिए। इस भेंट से राजा नाराज हो गए और उन्होंने इसे अपना अपमान माना। उन्होंने इसे कामकंदला के प्रति माधवानल का प्रणय निवेदन मानते हुए राजा ने माधवानल को राज्य से निर्वासित कर दिया।

प्राचीन गाथा के अनुसार माधवनल को नारद मुनि द्वारा उपहार स्वरूप एक वीणा भी दी गई थी। पुष्पावती नगर में नदी के किनारे अक्सर अपनी संगीत कला का प्रदर्शन करते हुए वहां नदी पर आने वाली महिलाओं समक्ष भी वीणा वादन करते रहने से महिलाओं के मंत्र मुग्ध हो जाने और माधवनल पर निर्लज्जता के आरोप लगे। जनता की शिकायत पर वहां के राजा ने माधवनल को देश निकाला दे दिया था। माधवानल उसके बाद यत्र-तत्र भ्रमण करते हुए कामावती राज्य मैं पहुंच गए जहां की एक पाषाण मूर्ति को माधवानंद द्वारा स्पर्श करने पर वह एक सुंदर नृत्य कला में प्रवीण महिला के रूप में जीवित हो उठी। जहां उसे कामकंदला नाम से पुकारा जाने लगा और वह राजा कामसेन के दरबार में नत्य करने लगी। राजा कामसेन संगीत प्रेमी व्यक्ति थे। नृत्य और उनके दरबार में संगीत के आयोजन होते रहते थे। एक बार माधवानल दरबार में पहुंचे और संगीत तथा नृत्य के कलाकारों की कुछ कमियों का उल्लेख किया तो राजा माधवानल से प्रभावित हुए। उन्हें दरबार में संगीत आयोजनों में सम्मिलित किया जाने लगा और उनकी संगीत कला को काफी सराहा भी जाने लगा।

बाद में माधवानल ने चक्रवर्ती सम्राट राजा विक्रमादित्य की नगरी उज्जैन की ओर प्रस्थान किया। महाकालेश्वर मंदिर जहां राजा विक्रमादित्य प्रतिदिन दर्शन करने आते थे वहां उन्होंने एक संदेश द्वारा अपनी व्यथा राजा के समक्ष रखी। राजा विक्रमादित्य ने माधवानल को अपने दरबार में बुलवाया और उसकी संगीत कला से प्रभावित हुए। उन्होंने अपने राज्य के दूतों को कामावती देश के राजा कामसेन के पास भेजा तथा माधवानल को उनकी प्रेयसी दिए जाने के का संदेश दिया अन्यथा युद्ध के लिए तैयार रहने की बात कही। कहा जाता है कि कामावती देश के राजा द्वारा विक्रमादित्य की बात नहीं माने जाने पर राजा विक्रमादित्य स्वयं युद्ध करने के लिए अपनी सैना सहित कामावती देश पहुंचे। कामावती देश के राजा कामसेन और विक्रमादित्य ने युद्ध के समय अपने-अपने ईष्ट को याद किया गया। राजा विक्रमादित्य के इष्ट भगवान शंकर प्रकट हुए, वहीं राजा कमसेन की ईष्ट मां भवानी प्रकट हुई। कहते हैं कि भगवान शिव द्वारा मां भवानी से कहते हुए दोनों पक्षों के बीच समझौता करवाया गया। राजा कामसेन ने नृत्यांगना कामकंदला को माधवानल को सौंपा गया। मां बमलेश्वरी के प्रादुर्भाव को लेकर लोगों के बीच इस तरह की कथाएं इस क्षेत्र में प्रचलित हैं। मान्यता है कि मां भवानी तथा शिवजी के प्रकट होने से यह क्षेत्र एक भगवदी तीर्थ बन गया है।

मां बमलेश्वरी के मंदिर में ऊपर पहाड़ी पर दर्शन के लिए जाने हेतु जहां पहाड़ी में पैदल मार्ग स्थित है वहीं श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए रोपवे भी बनाई गई है। इस रोपवे से माता के मंदिर पर जाने के बीच पहाड़ियों व हरियाली के साथ ही नीचे स्थित तालाब का दृश्य भी बड़ा सुहावना लगता है। प्राचीन समय में कामावती नाम से प्रसिद्ध इस नगर का नामकरण डोंगरगढ़ क्षेत्र के रूप में हुआ। मां बमलेश्वरी के यहां दो मंदिर स्थित हैं। एक मंदिर ऊपर पहाड़ी पर तथा एक मंदिर नीचे स्थित है। मंदिर के समीप स्थित चना बाबा का आश्रम भी लोगों के लिए आकर्षण का केंद्र रहता है। यहां सूर्यास्त का नजारा भी लोकप्रिय है। इस मंदिर पर आने वाले दर्शनार्थियों की मनोकामना पूर्ण होने पर यहां पर श्रद्धालुओं की ओर से ज्योति कलश की स्थापना भी की जाती है।

मां बमलेश्वरी के मंदिर के नीचे तल हटी पर एक तालाब स्थित है। लोगों का मानना है कि तालाब के जल से स्नान करने से तथा इसका उपयोग करने से चर्म रोगों नष्ट हो जाते हैं।

छत्तीसगढ़ के इस प्रसिद्ध देवी स्थल मां बमलेश्वरी मंदिर पर पहुंचने के लिए महाराष्ट के नागपुर से 200 किलोमीटर तथा छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर से कोई 100 किलोमीटर की यात्रा करना होती है। इन दोनों स्थान रेल मार्ग तथा सड़क मार्ग पर स्थित हैं।

तमाम खनिज संबंधी उद्योगों और विकास व भौतिक साधनों के बढ़ते प्रयोग के बाद भी छत्तीसगढ़ अपनी पुरानी धार्मिक एवं आदिम सांस्कृतिक धरोहर को बचाए हुए हैं। मां बमलेश्वरी के अलावा इस राज्य के जगदलपुर क्षेत्र में स्थित दंतेश्वरी माता का मंदिर भी बहुत प्रसिद्ध है। कहा जाता है कि इसे छत्तीसगढ़ की अपनी धार्मिक पहचान व आस्था का केंद्र भी माना जाता है। राजनांदगांव, खैरागढ़, छुईखदान आदि क्षेत्रों में कुछ स्थानों पर वर्तमान छत्तीसगढ़ की अपनी स्वाभिमानी पहचान के रूप में छत्तीसगढ़ महतारी की मूर्तियां भी देखने को मिलती हैं।

लघुकथा

बचपन

अविनाश अग्निहोत्री

मां आपसे एक बात पूछना थी।किचन के काम में उसका हाथ बंटाती हुई श्री ने अपनी सास की ओर होते हुए उससे कहा।

उनका इशारा पाते ही फिर श्री ने उनसे कहा कि जब भी आदित्य उदास या काम की चिंता लिए खाने की टेबल पर आते है। तब आप या दादीजी उनकी तरफ देख बस 'आज छुट्टी है' कहती है।और उसके बाद तो आदित्य सहित पास बैठा पूरा परिवार खिलखिला उठता है और मैं बस आप सभी को देखती ही रह जाती हूं।

मुझे कुछ समझ ही नही आता कि आप सब क्यों हंस रहे हो। मैंने ये बात कई बार आदित्य से भी पूछी पर वो हंसकर टाल गए।

तब उसकी सास ने उसे बताया कि अपने स्कूल के शुरुआती दिनों में आदित्य स्कूल जाने में बड़े नाटक किया करता था।

प्रायः जाने के लिए तैयार होकर इसी टेबल पर नाश्ता करते कहता। मैं स्कूल नहीं जाऊंगा आज छुट्टी है।और उसकी ये बात सुन तब भी हम हंस पड़ते।

फिर थोड़े बड़े होने पर उसकी वो आदत तो छूट गई पर बचपन की उसकी वो बात आज भी याद आते ही हम सबके चेहरे खिलखिला जाते है।

फिल्म समीक्षा

आदित्य दुबे

(लेखक वेबसाइट ई-अन्तर्भव में प्रबंध निदेशक है)

मानहानि के चर्चित मामले पर पुरअसर फिल्म है - 'महाराज'

यह फिल्म एक औपनिवेशिक गुलामी झेल रहे राष्ट्र में धार्मिक रूढ़िवाद और प्रगतिशील सुधार के बीच साम्राज्यवादी ब्रिटिश न्यायाधीशों द्वारा मध्यस्थता का एक उदाहरण है ।इस मामले ने वैष्णवों के प्रभावशाली पुष्टिमार्ग सम्प्रदाय के उच्च पुजारी जदुनाथजी द्वारा एक पत्रकार करसनदास के खिलाफ मानहानि का दावा दायर किया गया था और यही घटनाक्रम के आसपास इस फिल्म का कथासूत्र (स्टोरीलाईन) बुना गया है ।सम्भवतः यह देश का पहला चर्चित मानहानि का मुकदमा था जिसने सारे देश का ध्यान खींचा था ।

किसी विशेष कालखण्ड की किसी ऐसी घटना पर जिससे सामाजिक मूल्यों और न्याय व्यवस्था पर पर सवाल उठे हों और उससे जनहित के संरक्षण की मिसाल कायम हुई हो, उसे एक फिल्म की शक्ल देना एक जोखिम भरा काम है और वह जोखिम निर्देशक सिद्धार्थ मल्होत्रा ने -' महाराज ' फिल्म बनाकर उठाया है । वर्ष 2013 में प्रकाशित सौरभ शाह के गुजराती उपन्यास पर आधारित सिद्धार्थ पी मल्होत्रा की यह फिल्म वर्ष 1862 के ऐतिहासिक मानहानि मामले का फिल्मी रुपान्तरण है ।यह फिल्म एक औपनिवेशिक गुलामी झेल रहे राष्ट्र में धार्मिक रूढ़िवाद और प्रगतिशील सुधार के बीच साम्राज्यवादी ब्रिटिश न्यायाधीशों द्वारा मध्यस्थता का एक उदाहरण है।इस मामले ने वैष्णवों के प्रभावशाली पुष्टिमार्ग सम्प्रदाय के उच्च पुजारी जदुनाथजी द्वारा एक पत्रकार करसनदास के खिलाफ मानहानि का दावा दायर किया गया था और यही घटनाक्रम के आसपास इस फिल्म का कथासूत्र (स्टोरीलाईन) बुना गया है । सम्भवतः यह देश का पहला चर्चित मानहानि का मुकदमा था जिसने सारे देश का ध्यान खींचा था ।

किसी भी फिल्म में किसी चुनिंदा कालखण्ड को फिल्म के माध्यम से पुनर्प्रेषित करना फिल्मकार का विशेषाधिकार होता हैं और सिद्धार्थ इस मामले में कुछ हद तक सफल रहे हैं । वर्ष 1860 के दशक में, एक पत्रकार और समाज सुधारक, करसनदास मुलजी को एक शक्तिशाली धर्मगुरु के यौन शोषण को उजागर करने वाले एक लेख को लेकर अदालत में घसीटा गया था। डेढ़ सौ

साल से भी अधिक अरसे बाद इस घटना पर सिद्धार्ज ने करसनदास के जीवन पर आधारित एक फिल्म नेटफ्लिक्स के लिये बनाई । ज्यूडिशियल सब्जेक्ट होने के बावजूद निर्देशक ने कोर्ट रूम की घटनाएं अपनी फिल्म के अन्तिम चरण में ही ,बेहद ज़रुरी होने पर सीमित फुटेज के साथ दिखाई ।समूची फिल्म में पटकथा के निर्वहन के लिहाज से फिल्म निर्माता की ओर से यह एक समझदारी भरा फैसला रहा क्योंकि हिन्दी में पीरियड ड्रामा में ऐसे दृश्यों की पहचान हास्यपूर्ण विग और अतिरंजित लहजे के रुप में ही होती है। फिल्म का बड़ा हिस्सा समाज सुधारक करसनदास (जुनैद)और जदुनाथ (जयदीप अहलावत) , जिन्हें अनुयायी प्यार से जेजे कहते हैं उनके बीच की लड़ाई के रूप में बनाया गया है। भारी जनसमूह को जेजे अपने करिश्माई अन्दाज से अपनी ओर आकर्षित करता है ।वह महिला भक्तों की कमज़ोरियों और उनके विचारों का फ़ायदा उठाता है और उनका यौन शोषण करता है। हर कोई जेजे के मोह में बँधा दिखता है। केवल करसनदास, जो खुद एक आस्तिक और वैष्णव हैं, इससे अछूते दिखते हैं, क्योंकि वे अपने रूढ़िवादी सम्प्रदाय की अंधविश्वासी प्रथाओ-पर सवाल उठाते हुए बड़े हुए हैं।

इस फिल्म को रिलीज़ होने के पहले एक न्यायिक व्यवधान का सामना करना पड़ा था । एक धार्मिक सम्प्रदाय के सदस्यों की याचिका के बाद इस फिल्म की रिलीज को अस्थायी रूप से निलम्बित कर दिया गया था (यह आश्चर्यजनक रूप से सोशल मीडिया पर बहिष्कार के आह्वान के साथ था। नेटफ्लिक्स पर फिल्म के प्रीमियर के लिए निर्धारित होने के एक हफ्ते बाद इक्कीस जून को इस रोक को हटाते हुए, गुजरात उच्च न्यायालय ने फैसला सुनाया - ,

फिल्म देखने के बाद, इस अदालत को ऐसा कुछ भी आपत्तिजनक नहीं मिला । फिल्म में दर्शित मुकदमा उस समय की बॉम्बे सुप्रीम कोर्ट में लड़ा गया था और इसने व्यापक सार्वजनिक ध्यान और बहस को आकर्षित किया था । गुजराती भाषा के साप्ताहिक सत्यप्रकाश के सम्पादक करसनदास ने अदालत में सफलतापूर्वक अपना बचाव किया और उन्हें कोर्ट ने उन्हें इनाम की राशि भी दी थी और जैसा कि बताया जाता है कि इनाम की राशि मुकदमे के दौरान उनके द्वारा किए गए कुल खर्च से कम थी ।रिलीज से पहले निर्माताओं को जिन कानूनी परेशानियों का सामना करना पड़ा, उससे इस फिल्म के बारे में कुछ चर्चा भी हुई मगर इसका कोई सीधा लाभ फिल्म के कलेक्शन में नहीं हुआ।

निर्देशक सिद्धार्थ मल्होत्रा पर निश्चित रूप से यश राज फिल्म्स का पश्चातवर्ती प्रभाव (हैंग ओव्हर) है और ऐसा लगता है कि वे प्रोडक्शन हाउस के फिल्म निर्माण के विशिष्ट फ़्लफ़-सेंटीमेंट-एण्ड-ग्रैंडियर स्कूल से छुटकारा पाने में असमर्थ हैं - एक संवेदनशीलता जो इस कहानी के साथ अजीब तरह से जुड़ी हुई है उसका ठीक -ठीक उपयोग फ़िल्म में नहीं हो पाया है ?।

आमिर खान के बेटे जुनैद ने इस फिल्म से अपना एक्टिंग कैरियर शुरु किया है और जुनैद. गुस्से से भरे समाज सुधारक की भूमिका में फिट होने की पूरी कोशिश भी करते हैं, लेकिन वे सिर्फ़ वैसा दिखने की कोशिश भर कर पाते हैं। यहाँ यह भी कहा जा सकता है कि वे आमिर खान के बेटे हैं और इस बेकार फिल्म के स्थान पर किसी बेहतर फिल्म से डेब्यू कर सकते थे ।आमतौर पर एक्टिंग फील्ड के भरोसेमंद एक्टर अहलावत के चेहरे पर एक खौफनाक मुस्कान है और उन्होंने अपनी भूमिका के साथ काफी हद तक न्याय किया है । एक दिलचस्प कथानक के बावजूद फिल्म का ट्रीटमेंट नीरस है, सेट्स बनाने में कल्पनाशीलता का अभाव है और ऊबाउ और अटपटे संवादों ने फिल्म की फेसवेल्यू को और भी घटाया है।

बैतूलबाजार में बिजली चोरी पर बड़ा एक्शन

कंपनी ने ताबड़तोड़ कार्रवाई में 9 कनेक्शन काटे, 41 एफआईआर दर्ज

बैतूल। मध्यप्रदेश मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कम्पनी लिमिटेड ने बैतूल बाजार में बिजली चोरी रोकने के लिए बड़ा कदम उठाया है। शुक्रवार, 5 जुलाई को कंपनी ने विशेष चेकिंग अभियान चलाया, जिसके तहत घरेलू और औद्योगिक विद्युत कनेक्शनों की सघन जांच की गई। इस अभियान के दौरान अनियमितताओं का खुलासा हुआ, जिसमें 9 कनेक्शनों को बिजली चोरी के मामले में तुरंत काट दिया गया। इसके अलावा, 17 मामलों में प्रकरण पंजीबद्ध किए गए, बैतूल बाजार थाना में कुल 41 एफआईआर की संख्या पहुंच गई है। इन मामलों में आठ लोगों ने कुल 1.33 लाख रुपये की राशि जमा कराई।

घरेलू और औद्योगिक कनेक्शनों की हुई जांच..

चेकिंग अभियान के दौरान, कंपनी ने घरेलू और औद्योगिक कनेक्शनों की बारीकी से जांच की। बिजली चोरी और अन्य अनियमितताओं की पहचान की गई और तुरंत कार्रवाई की गई। कंपनी ने यह कदम यह सुनिश्चित करने के लिए उठाया है कि सभी उपभोक्ता सही तरीके से बिजली का उपयोग करें और किसी भी प्रकार की चोरी न हो। कंपनी ने जनता को चेतावनी दी है कि बिजली चोरी एक गंभीर अपराध है और इसके खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी। कंपनी के अधिकारियों ने यह भी कहा कि इस तरह के अभियान आगे भी जारी रहेंगे ताकि बिजली चोरी पर पूरी तरह से रोक लगाई जा सके।

मुख्यमंत्री ने बहनों और किसानों भाइयों के खाते में सिंगल क्लिक के माध्यम से राशि का किया अंतरण

जिले में लाड़ली बहनों को 33 करोड़ और किसानों को 45 करोड़ का सिंगल क्लिक से खातों में अंतरण

बैतूल। मुख्यमंत्री डॉ.मोहन यादव ने टीकमगढ़ जिले के ग्राम छिपरी से मुख्यमंत्री किसान कल्याण योजना के अंतर्गत दी जाने वाली आर्थिक सहायता की पहली किस्त के रूप में 1630 करोड़ की राशि प्रदेश के 81 लाख किसानों के खाते में अंतरित की। इसके अलावा मुख्यमंत्री डॉ.यादव ने लाडली बहना योजना एवं उज्जवला योजना के तहत लाभार्थी बहनों को गैस रिफिल अनुदान भी वितरित किए। इस कार्यक्रम का लाइव प्रसारण कलेक्टोरेट के सभागार में देखा व सुना गया। इस अवसर पर कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी, जिला पंचायत अध्यक्ष राजा पवार, जिला पंचायत उपाध्यक्ष हंसराज धुर्वे, मुख्य कार्यपालन अधिकारी अक्षत जैन, एडीएम राजीव नंदन श्रीवास्तव, संयुक्त कलेक्टर मकसूद अहमद सहित लाभान्वित हितग्राही उपस्थित थे।

एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत नगर वन जमन जत्ती पहाड़ी पर पौधारोपण किया

धार। एक पेड़ मां के नाम अभियान अंतर्गत नगर वन जमन जत्ती पहाड़ी पर वन परिक्षेत्र, वन मंडल धार द्वारा वृक्षारोपण कार्यक्रम के तहत शनिवार को वृहद पौधारोपण का आयोजन किया गया। जिसमें

वन मंडल अधिकारी अशोक कुमार सोलंकी, वन परिक्षेत्र अधिकारी महेश कुमार अहिरवार, परिक्षेत्र सहायक बबीता बघेल वनरक्षक एवं प्रभारी नगर वन गौरव तिवारी एवं दीपक रावत सहित अन्य अधिकारी कर्मचारी द्वारा पौधारोपण किया गया। इस कार्यक्रम में आयुष विभाग के आर सी मुवेल तथा आयुष विभाग के डॉक्टरों सहित कर्मचारी सम्मिलित हुए। साथ ही जिला लोक अभियोजन विभाग से जिला लोक अभियोजन अधिकारी एवं सहायक लोक अभियान अधिकारी गण सहित वकीलगणों ने भी पौधारोपण किया एवं धार शहर के सोनी परिवार ने भी पौधारोपण किया। एक पेड़ मां के नाम कार्यक्रम को सफल हेतु सभी ने पौधों का रोपण किया गया। जिसमें हरड़, बहेड़ा, आंवला, आम, पीपल, त्रिवेणी, रामफल, नीम, जामुन, जाम, आदि के पौधे रोपित किए गए। साथ ही पौधों को सुरक्षित रखने का संकल्प भी लिया गया। प्रकृति और माँ का करें सम्मान, आओ लगायें एक पेड़ माँ के नाम।

जरूरतमंदों की मदद हम सबकी सामुहिक जिम्मेदारी : कलेक्टर ऋषव गुप्ता

देवास/मोहन वर्मा । समाज के हर सक्षम को चाहिए की वह अपने समाज के प्रति संवेदनशील बना रहे। जरूरतमंद तबके की मदद करना हम सबकी सामुहिक जिम्मेदारी है। बेअरलॉकर उद्योग अपने मुनाफे और अपने सीएसआर फंड से लगातार जरूरतमंदों की मदद कर रहा है फिर चाहे स्कूलों में बच्चों को फर्नीचर देना हो या निर्धन वर्ग को ऐसे निशुल्क चूल्हा उपलब्ध करवाना हो जो पर्यावरण फ्रेंडली होने के साथ हितग्राही के स्वास्थ्य

का ध्यान रखता हो, यह सराहनीय है । यह बात जिला कलेक्टर ऋषव गुप्ता ने खिवनी अभ्यारण्य के निकट निवासरत पंचायतों के हितग्राहियों को बेअरलॉकर एडिटिव्स इंडिया उद्योग द्वारा धुंआरहित स्टोव के वितरण समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में कही।बेअरलॉकर एडिटिव्स इंडिया उद्योग द्वारा क्षेत्र की ओंकारा, ककड़दी, सातल, नंदाखेड़ा,नंदाडाई, पटरानी,मचवास, तथा विक्रमपुर के 500 से अधिक हितग्राहियों को धुंआरहित और कम लकड़ी की खपत वाले स्टोव निशुल्क वितरित किए गए। स्टोव वितरण का यह कार्यक्रम ग्राम पंचायत ओंकारा के हाई स्कूल परिसर में बेअरलॉकर एडिटिव्स इंडिया उद्योग द्वारा अपने सीएसआर सहयोगी एक्टइव फाउंडेशन के समन्वय से आयोजित किया गया था।बेअरलॉकर उद्योग के प्रबंधक प्रवीण शर्मा तथा एक्ट इव फाउंडेशन के अध्यक्ष मोहन वर्मा ने बताया कि निर्धन तबके के ग्रामवासियों द्वारा चूल्हे का उपयोग करते समय धुए के कारण आंखों और फेफड़ों में इसका असर होता है,इसलिए कंपनी द्वारा हितग्राहियों को धुंआ रहित ऐसे स्टोव का वितरण किया गया है जिसमे लकड़ी की खपत भी साठ प्रतिशत कम होगी। कार्यक्रम में अतिथि रूप में जिलाधीश श्री गुप्ता के साथ कन्नौद एसडीएम प्रवीण प्रजापति,जिला खाद्य अधिकारी शालू वर्मा,धर्मेंद्र शर्मा,बेअरलॉकर उद्योग के प्लांट हेड सौरभ सिंह चौहान,ने चूल्हे के बारे में विस्तृत जानकारी दी ।कार्यक्रम का संचालन मोहन वर्मा ने किया तथा आभार एसडीएम प्रवीण प्रजापति ने माना ।

ग्राम चिखली माल में नल-जल योजना में लीपापोती

8 माह से पानी की किल्लत से जूझ रहे ग्रामीण, महिलाओं ने किया प्रदर्शन

बैतूल। केंद्र सरकार की महत्वकांक्षी जल-नल योजना को जिम्मेदार जनप्रतिनिधि एवं अधिकारी सही तरीके से क्रियान्वित ना करके सरकार की महत्वाकांक्षी योजना में जमकर लीपापोती करते दिखाई दे रहे है। विकासखंड प्रभातपट्टन की ग्राम पंचायत के आदिवासी बाहुल्य गांव चिखलीमाल के ग्रामीण पिछले 8 महीने से पानी की किल्लत से जूझ रहे है। सरपंच, सचिव द्वारा गांव के जल संकट को लेकर गंभीरता से ध्यान नहीं दिया जा रहा है। ग्रामीण कई किलोमीटर दूर से पीने का पानी लाने को मजबूर है। पानी की किल्लत से परेशान ग्रामीणों ने शनिवार सुबह खाली बर्तन लेकर प्रदर्शन किया। ग्रामीणों ने सरपंच और सचिव से तत्काल पानी की व्यवस्था करने या अपने पद से इस्तीफा देने की मांग की है।

ग्रामीणों ने बताया कि गांव में नलजल योजना है इसके तहत 1 किलोमीटर दूर टयूबवेल किया है। इस ट्यूबवेल के कनेक्शन को खेतों के बिजली सर्किट से जोड़ दिया है। खेतों के बिजली कनेक्शन से जोड़ने के कारण अधिकतर समय वहां बिजली गुल रहती है, इसलिए गांव में पानी नहीं पहुंच पा रहा है। कई बार ग्रामीणों ने सरपंच, सचिव से ग्रामीण क्षेत्र की बिजली से मोटर पंप जोड़ने की मांग की और पानी की किल्लत को दूर करने के लिए कहा गया, लेकिन किसी ने ध्यान नहीं दिया। गांव में दो हैण्डपंप तो है, परंतु इन दोनों हैण्डपंपों में पानी नहीं आ रहा है। गांव की महिलाएं दूर दराज से पानी लाने को मजबूर हो गए है। ग्रामीणों का कहना है

कि नलजल योजना का कनेक्शन बिजली विभाग ने काट दिया है, कनेक्शन भी अभी तक नहीं जोड़ पाए है। पानी की किल्लत से परेशान ग्रामीणों ने शनिवार को जमकर प्रदर्शन किया। गर्मी के दिनों में तो ग्रामीण पानी की समस्या से जूझते आए ही है। अब बारिश के दिनों में भी ग्रामीणों को पानी की समस्या से जूझना पड़ रहा है।

इनका कहना..

नलजल योजना के कनेक्शन को खेतों की बिजली लाईन से जोड़ दिया है। लाईट नहीं होने से पानी सप्लाई बाधित हो रही है। जल्द ही कनेक्शन को ग्रामीण क्षेत्र से जोड़ा जाएगा और ग्रामीणों की समस्या को जल्द दूर करेंगे।

किशोरीलाल हरसुले, सचिव, ग्राम पंचायत, चिखलीमाल

प्रत्येक कार्यकर्ता वर्ष में एक पौधा अवश्य लगाकर उसे बड़ा करे : केंद्रीय राज्यमंत्री सावित्री ठाकुर

धार। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आह्वान एक पेड़ मां के नाम अभियान के अंतर्गत केंद्रीय राज्यमंत्री महिला एवं बाल विकास मंत्रालय एवं धार- महू लोकसभा सांसद सावित्री ठाकुर ने शनिवार को भाजपा जिला कार्यालय पर पौधारोपण कर जनसंघ के संस्थापक भाजपा के पितृपुरुष डॉ श्यामाप्रसाद मुखर्जी की जन्म जयंती पर श्रद्धासुमन अर्पित किए।

उन्होंने कहा कि प्रदेशवासी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के आह्वान के अनुरूप, अपनी माँ के नाम एक पेड़ भाजपा के प्रत्येक कार्यकर्ता वर्ष में एक पौधा अवश्य लगाएं तथा उसकी देखभाल भी करें। देशभर में करोड़ों लोग एक पेड़ मां के नाम अभियान से जुड़कर पौधरोपण कर रहे हैं, यह बहुत बड़ा अवसर

है जब हम पौधरोपण कर आने वाली पीढ़ियों को प्रकृति को सहजने का संदेश दे रहे हैं।

भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा ने बताया कि इस दौरान भाजपा नेता अशोक जैन, नरेश राजपुरोहित, श्याम नायक नगर मंडल अध्यक्ष विपिन राठौर व नितेश अग्रवाल, महिला मोर्चा जिलाध्यक्ष कुसुम सोलंकी, मुन्नालाल राठौर, शिव पटेल, नगर महामंत्री राजेश डाबी, सन्नी होड़ा, अनिल गेहलोत, दीपेन्द्रसिंह ठाकुर,अनिल यादव, अजीत जैन, प्रभात कुमार गुप्ता भय्यूराम, देवेंद्र रावल, राजेंद्र राठौर, अजय राठौर, गौरव जाट, सीमा पंड्या, अभय वसुनिया,नितिन चौहान, दीपक बौरासी, राजेश कुमावत, महेंद्र सोनी, नवीन भंवर, देवांग पंवार, लखन शर्मा, अतुल फकीरा, रतन भाबर, महेश कदम आदि भाजपा कार्यकर्ता उपस्थित थे ।

न्यायाधीश और वरिष्ठ अधिकारियों ने किया फलदार पौधों का रोपण

वर्षा ऋतु में एक पेड़ अपनी माँ की स्मृति में लगाने का किया आह्वान

बैतूल। पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्धन के उद्देश्य से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा शुरू किए गए व्यापक पौधारोपण अभियान एक पेड़ माँ के नामष् के तहत नागरिकों को वर्षा ऋतु में एक पेड़ अपनी माँ की स्मृति में लगाने का आह्वान किया गया है। इसी क्रम में जिला न्यायाधीश प्रवेश कुमार प्राण ने वन विश्राम गृह बैतूल परिसर में फलदार पौधे का रोपण किया। पौधारोपण के बाद पौधे का वायुदूत एप के माध्यम से अपलोड कर रजिस्टर किया गया, ताकि लगाए गए पौधे का समय-समय पर मूल्यांकन किया जा सके। इस पहल का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि पौधों की देखभाल सही तरीके से हो और उनकी वृद्धि पर निगरानी रखी जा सके। इस अवसर पर जिला न्यायाधीश प्रवेश कुमार प्राण ने सभी नागरिकों से अपील की कि

पेड़ों को केवल उनकी आर्थिक या भौतिक आवश्यकता से न देखें बल्कि पर्यावरणीय दृष्टिकोण से भी उनका महत्व समझें। उन्होंने कहा, प्रत्येक वृक्ष में न केवल फल और प्राणवायु देने की क्षमता है, बल्कि यह अन्य जीव-जन्तुओं और पक्षियों का आवास भी है, जो वृक्ष के खत्म होने पर नष्ट हो जाता है। अतः प्रत्येक नागरिक को इसके प्रति संवेदनशीलता अनुभव करनी चाहिए और उसी के अनुसार आचरण करना चाहिए। इस दौरान कई वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित रहे, जिनमें वन संरक्षक वन वृत्त बैतूल पी.एन. मिश्रा (भा.व.से.), वनमंडलाधिकारी दक्षिण बैतूल श्री विजयानन्तम टी.आर. (भा.व.से.), वनमंडलाधिकारी पश्चिम बैतूल वरुण यादव (भा.व.से.), वनमंडलाधिकारी उत्पादन सचिन एन. (भा.व.से.), उपवनमंडलाधिकारी बैतूल (सा.) श्रेयस श्रीवास्तव, उपवनमंडलाधिकारी आमला (सा.) बीरेन्द्र कुमार पटेल (भा.व.से.) एवं प्रशिक्षु भा.व.से. अधिकारी विनोद जाखड़, नीरज निश्चल, अक्षत जैन, अनुदेशक वन विद्यालय बैतूल श्रीमती तरुणा वर्मा, वन परिक्षेत्र अधिकारी बैतूल (सा.) खुशाल सिंह बघेल एवं अन्य स्टाफ उपस्थित थे।

बैतूलबाजार नपा परिषद ने किया वृक्षारोपण

बैतूल। बैतूलबाजार नगर परिषद ने पर्यावरण संरक्षण के लिए वृक्षारोपण अभियान शुरू किया गया। जिसके अंतर्गत नगर परिषद द्वारा नगर परिषद के मंगल भवन परिसर में वृक्षारोपण किया गया। इस कार्यक्रम पार्षद विनीत बारमासे, राजेंद्र पवार, मुख्यनागर पालिका अधिकारी विजय तिवारी, उप यंत्री पंकज धुर्वे,साहेब राव पंडाग्रे,हेमन्त महाले सहित परिषद के कर्मचारी मौजूद रहे।

आज जगन्नाथ रथ यात्रा , तैयारी पूर्ण , भक्त अपने हाथों से रथ खिंचने को व्याकुल

धार। शहर में लगातार तीसरे वर्ष भी उड़ीसा के पुरी स्थित भगवान श्री जगन्नाथ जी की प्रसिद्ध रथ यात्रा के तर्ज पर धार की भोजशाला परिसर स्थित अखंड ज्योति मंदिर से भव्य रथ यात्रा निकाली जाएगी , जिसको लेकर आयोजन समिति श्री सांवरिया सेठ भक्त मंडल द्वारा पूरी तैयारी कर ली गई है , जिसको लेकर आज श्री सांवरिया सेठ भक्त मंडली के स्वयं प्रकाश सोनी , डॉ.अशोक शास्त्री , अशोक जोशी , ने पत्रकारों से चर्चा करते हुए 7 जुलाई को निकाली जा रही भगवान श्री जगन्नाथ जी की भव्य रथ यात्रा की जानकारी दी । स्वयं प्रकाश सोनी ने बताया कि साँवरिया सेठ मंदिर भक्त मंडल द्वारा स्वयं का रथ तैयार किया गया हैं , जिसने भगवान जगन्नाथ के विग्रह की स्थापना की जाएगी । 56 भोग का भोग के साथ महारती के पश्चात् भगवान जगन्नाथ शहर के विभिन्न मार्गों से होते हुए त्रिमूर्ति स्थित साँवरिया सेठ मंदिर पहुँचेंगे । डॉ. अशोक शास्त्री ने बताया कि जगन्नाथ रथ यात्रा अब हमेशा आषाढ़ शुक्ल द्वितीया तिथि को ही निकाली जाएगी । जगन्नाथ में भी निकालने की परंपरा इसी परंपरा का धार भी

पालन करेगा । भोजशाला स्थित अखंड ज्योति मंदिर से दोपहर 3 बजे ठीक समिति के पदाधिकारियों के साथ शहर के गणमान्य द्वारा महाआरती , छप्पन भोग पश्चात् सैकड़ो भक्तों द्वारा अपने हाथों से रथ खींचते हुए अखंड ज्योति मंदिर से राजवाडा , आनंद चौपटी , धानमंडी , कश्यप भवन से बख्तावर मार्ग , मोहन टाकीज होते हुए त्रिमूर्ति कालोनी स्थित साँवरिया सेठ मंदिर पनहुचेगी । समिति के अशोक जोशी ने बताया की जो भक्त अपनी सेवा रथ में सहयोग करता हैं तो उसका नाम उस रथ पर लिखा जाएगा ।संतोष पांडे ने बताया की रथ यात्रा में धार नगर सहित आसपास के क्षेत्र के भक्तों को आयोजन में भाग लेकर दर्शन पूजन महा आरती के साथ रथ यात्रा में रस्सी खींचकर पावन आयोजन का हिस्सा बनने की अपील की है । साँवरिया सेठ मंदिर में आरती पश्चात महाप्रसादी का आयोजन भी रखा गया हैं । इस अवसर पर समिति के ओम सोलंकी , प्रताप सिंह रघुवंशी भी उपस्थित थे ।

इस बार 25 हजार सैनिकों को बंधेगी तिरंगा राखी

***पहले ही दिन कुनबी समाज की महिलाओं ने बनाई 2500 राखियां**

***सरहद पर जाने वाली बेटियों के राष्ट्र रक्षा मिशन की सफलता के लिए एकजुट होने लगा बैतूल**

***मिशन का रजत जयंती वर्ष होगा विशेष, 24 वर्षों में देश की हर दिशा के अंतिम छोर तक पहुंची बेटियां**

बैतूल। इस बार क्षत्रिय लोनारी कुनबी समाज महिला संगठन आमची माती आमची संस्कृति ने राष्ट्र रक्षा मिशन 2024 का आगाज सैनिकों के लिए राखी बनाने के साथ किया। 6 जुलाई शनिवार को नेहरु पार्क में संगठन की महिलाओं ने सामूहिक रुप से तिरंगा राखी बनाने का कार्यक्रम आयोजित किया और एक ही दिन में 25 सौ राखियों का निर्माण कर मिसाल कायम की। इस कार्यक्रम में नगर पालिका अध्यक्ष पार्वती बाई बारस्कर विशेष रुप से महिलाओं की हौसलाअफजाई के लिए पहुंची। इस अवसर पर श्रीमती बारस्कर ने कहा कि बैतूल का यह मिशन पूरे देश में पहुंच चुका है। यह सेना की हौसलाअफजाई की परम्परा है जो बैतूल की बेटियां निभा रही है। राष्ट्र रक्षा मिशन ने बैतूल को अलग पहचान दी है। गौरतलब है कि कारगिल विजय के बाद बैतूल की बेटियों ने

सरहदों पर तैनात सैनिकों की हौसला अफजाई के लिए संकल्प लिया। बैतूल सांस्कृतिक सेवा समिति के राष्ट्र रक्षा मिशन का यह 25 वां वर्ष है और समिति के रजत जयंती वर्ष के कारण अभी रक्षा बंधन पर्व को करीब डेढ़ महीने का समय है लेकिन रजत जयंती वर्ष को विशेष बनाने के लिए कार्यक्रमों का आयोजन शुरु हो गया है।

देशभक्ति के रंगों में रंगा पार्क--क्षत्रिय लोनारी कुनबी समाज महिला संगठन आमची माती आमची संस्कृति के पदाधिकारी अध्यक्ष सिद्धलता महाले, उपाध्यक्ष सुनीता देशमुख, सह उपाध्यक्ष संगीता चढोकार, सचिव ज्योति बारस्कर, सह सचिव अलका वागद्रे, कोषाध्यक्ष वंदना पंडाग्रे, सह कोषाध्यक्ष दीपिका वागद्रे, संयुक्त सचिव दुर्गा दवंडे के नेतृत्व में दोपहर 12 बजे करीब एक सैकड़ा महिलाएं राखी बनाने के लिए नेहरु पार्क पहुंची।

तिरंगे के केसरिया, सफेद, हरे एवं नीले रंगों के साथ सुनहरे मोतियों का समावेश कर हर साल की तरह तिरंगा राखियां बनाई गई। खास बात यह थी कि महिलाएं तिरंगा थीम के ड्रेस कोड में नेहरु पार्क पहुंची और तिरंगा राखियां बनाई। ड्रेस कोड एवं तिरंगा राखियों की वजह से पूरा नेहरु पार्क देशभक्ति के रंगों में रंगा हुआ नजर आ रहा था।

तीन घंटे में 2500 राखियों का निर्माण

कुनबी समाज की महिलाओं ने 6 जुलाई को मात्र तीन घंटे में 2500 राखियां बनाई। यह राखिया नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमती पार्वती बाई बारस्कर की मौजूदगी में समाज की महिला संगठन अध्यक्ष सिद्धलता महाले एवं अन्य पदाधिकारियों ने बैतूल सांस्कृतिक सेवा समिति की अध्यक्ष गौरी पदम, कोषाध्यक्ष जमुना पंडाग्रे, सचिव भारत पदम, सह सचिव ईश्वर सोनी, सदस्य मेहर प्रभा परमार, प्रचिति कमाविसदार, रेखा अतुलकर, सरिता अतुलकर, प्रिंयका पंडोले, प्रीति सोनी, नव्या अतुलकर, चेताली गौर, उषा अतुलकर, वंदना पंडाग्रे को सौंपी। गौरी पदम ने बताया कि इस बार 25 हजार से अधिक सैनिकों सरहदी बहनों द्वारा राखी पोस्ट के माध्यम से भेजी जाएगी। इसके अलावा राष्ट्र रक्षा मिशन 2024 के तहत विभिन्न आयोजन पूरे जिले में किए जाएंगे। उन्होंने प्रतिवर्ष बैतूल जिले, प्रदेश, देश के विभिन्न प्रांतों से मिलने वाले सहयोग एवं प्रोत्साहन के लिए कृतज्ञता व्यक्त की एवं इलेक्ट्रानिक एवं प्रिंट मीडिया का आभार मानते हुए कहा कि मीडिया की वजह से ही बैतूल की बेटियों का समाज से सीमा को और सीमा को समाज से जोडने का संकल्प से देशवासी अवगत हो सके है।

'मिर्जापुर'

दर्शकों के दिमाग से उतरा तीसरा सीजन

वेब सीरीज 'मिर्जापुर' के प्रशंसक इस तीसरे सीजन से सबसे ज्यादा निराश होंगे। पंकज त्रिपाठी को पिछले सीजन में गंभीर रूप से घायल होते दिखाया गया। उनके भविष्य को लेकर चिंतित दर्शकों को दिलासा और राहत सीरीज में काफी देर से मिलती है और जब तक मामला खुलता है सीरीज का असल आकर्षण खो चुका होता है। पंकज त्रिपाठी के लिए साल 2024 का ये तीसरा बड़ा झटका है। उनकी फिल्म 'मैं अटल हूं' फ्लॉप रही। फिर नेटफ्लिक्स ने उनकी इमेज का फिल्म 'मर्डर मुबारक' में कचरा किया और अब ये वेब सीरीज 'मिर्जापुर' का तीसरा सीजन।

वेब सीरीज 'मिर्जापुर' का तीसरा सीजन अपना खुद का आकर्षण ही खो चुका है। कुल 10 एपिसोड में फैली इस कहानी को आखिर तक देखने के लिए समय भी खूब चाहिए और हिम्मत व धैर्य भी। इसके बीते दो सीजन देख लहालोट रहे दर्शकों के लिए ये गंभीर निराशा लाती है। कालीन भैया इस कहानी में इस गति को प्राप्त होंगे, पहला सीजन देखते समय किसने सोचा होगा भला इस सीजन में सीरीज के बाकी कलाकारों का आभा मंडल भी बुझा बुझा सा ही दिखता रहा। अटक अटक कर चलते अली फजल ही पूरी सीरीज में जो कुछ करंट है, वह बना पाते हैं। श्वेता त्रिपाठी ने तीसरे सीजन में अपने अभिनय में कुछ नया पाने की कोशिश ही नहीं की है। रसिका दुग्गल के पास भी अभिनय का कोई नया रस दिखाने को नहीं बचा।

वेब सीरीज 'मिर्जापुर' प्रसारित करने वाले ओटीटी अमेजन प्राइम वीडियो और इसे बनाने वाली कंपनी एक्सेल एंटरटेनमेंट ने शीर्षासन कर दिया। किसने सोचा होगा कि 'भौकाल' सीरीज का अंत ऐसा होगा। इस सीजन को देखकर नहीं लगता कि इस कहानी को चौथा सीजन नसीब भी होगा। वेब सीरीज 'मिर्जापुर' के तीसरे सीजन की कहानी ने अपने पिछले दो सीजनों के प्रशंसकों को सबसे ज्यादा निराश किया। फरहान अख्तर मार्वल सिनेमैटिक यूनिवर्स का हिस्सा बनने के साथ ही लगता है इसके मुखिया केविन फाइगी की महिला किरदारों के प्रति हाल के बरसों में बनी सहानुभूति से खासे प्रभावित हुए।

'मिर्जापुर' के तीसरे सीजन को महिला किरदारों के नाम कर दिया। मुख्यमंत्री बनीं माधुरी यादव फिर से सफेद साड़ी में भले आ चुकी हों लेकिन उत्तर प्रदेश को भयमुक्त प्रदेश बनाने और हर जोर जुल्म की टक्कर में संघर्ष करते रहने के नारे के साथ अब उनके नए तेवर हैं। मुन्ना भैया के अंतिम संस्कार से ही सीरीज

का तीसरा सीजन शुरू होता है और उनको मुखाग्नि देने के प्रसंग से सीरीज के तीसरे सीजन की दिशा तय होती है।

इस बार गोलू और गुड्डू कुछ जय और वीरू बनते दिख रहे। गब्बर की खैनी वाला तड़का भी सीरीज के लेखकों की टीम यहां ले आई है। बीना के बदन की आग अब भी भड़क रही है। और, इसकी आंच में वह कुछ नए 'पकवान' भी सेंकती दिख रही है। डिम्पी का रोल रिवर्सल हो रहा है। वह चुप रहकर बड़ा काम करने की फिराक में है। शबनम की अपनी अलग दुकान सज चुकी है। पुलिस अफसर को मारने के बाद पांडे जी ने अदालत में सरेंडर कर दिया है। घरवाले उनकी कहानी का क्लाइमेक्स बदलना चाहते हैं लेकिन उनको अपनी कहानी का यही टेंट पोल अच्छा लग रहा है।

तंबू तना रहे, इसके लिए वेब सीरीज 'मिर्जापुर' के तीसरे सीजन को इसके लेखक अपूर्वा धर बडगैया पूरी कोशिश करके बड़ी लाइन पर बनाए रखने की कोशिश करते हैं, लेकिन छोटी लाइन वाली इसके मेकर्स की आदत दर्शकों को सीरीज देखने का आनंद लेने नहीं देती। तकनीकी तौर पर वेब सीरीज 'मिर्जापुर' का तीसरा सीजन बहुत ज्यादा कमजोर है। सीरीज देखकर लगता है कि एक्सेल एंटरटेनमेंट ने इसके प्रोडक्शन बजट में भारी कटौती की है और अपना मार्जिन बढ़ाने के लिए पिछले दो सीजन की इसकी लोकप्रियता और प्रतिष्ठा दांव पर लगा दी है। गद्दी को खत्म करने वाली लीक पर चले इस सीजन की सिनेमैटोग्राफी से लेकर इसका संपादन और स्टंट कोरियोग्राफी सब किसी छोटे बजट की क्षेत्रीय फिल्म जैसा लगता रहा।

संवादों की अस्पष्टता से ये भी पता चलता है कि इसकी साउंड डिजाइनिंग गड़बड़ है। वेब सीरीज 'मिर्जापुर' का पहला सीजन जब 2018 में आया था तो क्राइम सीरीज का ये उद्गम स्थल बना था। दूसरा सीजन भी 2020 में आ गया था। तब तक सारे ओटीटी क्राइम सीरीज दुहने निकल पड़े थे और अब जब साल 2024 में आकर ओटीटी का बुलबुला फूटता दिख रहा है।

रियल बॉक्स

दर्शकों को बांधता है चौंकाने वाला सस्पेंस

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक हैं।

यदि फिल्म के शौकीन कुछ दर्शकों से सवाल किया जाए कि उन्हें कैसी फ़िल्में पसंद हैं, तो निश्चित रूप से ज्यादातर का जवाब होगा सस्पेंस वाली फ़िल्में। ऐसी फ़िल्में जिनका अंत चौंकाने वाला हो। इसका कारण है, कि इस तरह के कथानक पर बनी फ़िल्में दर्शकों को भी अपने साथ जोड़ लेती है। फिल्म के दृश्यों को देखने वाला सोचता रहता है कि अब क्या होगा! यही वजह है कि इन फिल्मों सफलता ज्यादा होती है। क्योंकि, इनके क्लाइमेक्स दर्शकों को हतप्रभ कर देते हैं! ऐसी फ़िल्में सिर्फ हिंदी में ही सफल नहीं रही, बल्कि हॉलीवुड में भी सस्पेंस, थ्रिलर वाली फिल्मों को ही ज्यादा पसंद किया जाता रहा। डायरेक्टर, प्रोड्यूसर और स्क्रिप्ट राइटर अल्फ्रेड हिचकॉक को तो 'मास्टर ऑफ सस्पेंस' ही कहा जाता रहा। सस्पेंस और थ्रिलर वाले कथानक शुरू से दर्शकों के प्रिय विषय रहे हैं। जिस फिल्म के अंत के बारे में उनका खुद का अनुमान गलत निकले, वो उन्हें ज्यादा पसंद! क्लाइमेक्स में ऐसा शख्स सामने आए, जिसका दर्शकों ने अनुमान नहीं लगाया हो! ऐसी फिल्में ही दर्शकों को बांधने वाली होती है। सस्पेंस थ्रिलर वाले कथानक की फिल्मों में दर्शकों को शुरू लगता है कि उसे पता था कि आगे यही होने वाला है। इन फिल्मों में ऐसा अजूबा ही होता है। जो सबसे ज्यादा शरीफ दिखता है, शातिर निकलता है। लेकिन यह अनुमान कई बार गलत भी हो जाता है और एक अलग ही थ्रिलर फिल्म का अंत दर्शक के सामने आता है। सस्पेंस का आशय डरावनी फिल्मों से नहीं है। बल्कि, इस तरह की फ़िल्में अपने कसे हुए कथानक से दर्शक को बांधती है। देखने वाला हमेशा इसी उधेड़बुन में लगा रहता है कि अब क्या होगा

परदे पर अभी तक ऐसी फ़िल्में सीमित थीं। पर ओटीटी प्लेटफॉर्म आने के बाद लगने लगा कि दर्शक सस्पेंस, थ्रिलर और मर्डर मिस्ट्री ही देखना चाहता है। जबकि, ये तीनों ही अलग-अलग शैलियां हैं। थ्रिलर फिल्मों में एक्शन होता है, लेकिन सस्पेंस नहीं! उनमें जो सस्पेंस होता है, उसका राज धीरे-धीरे खुलता रहता है। लेकिन, सस्पेंस फिल्म में न तो रहस्य जरूरी है और न एक्शन! इनमे चौंकाने वाले सीन ज्यादा होते हैं, जो दर्शक को सोचने का मौका भी नहीं देते। मिस्ट्री और सस्पेंस थ्रिलर फ़िल्में एक जैसी नहीं होती। दोनों का ट्रीटमेंट अलग-अलग होता है। पर, मिस्ट्री फिल्मों में सिर्फ एक राज होता है, जिस पर से फिल्म के अंत में परदा उठता है। इस तरह की फिल्मों की पटकथा का ताना-बाना किसी हत्या के इर्द-गिर्द बुना जाता है। पूरी कहानी अनजान हत्यारे की खोज पर आधारित होती है। संदेह के लिए कई पात्रों को निशाने पर रखा जाता है। हत्यारे को पकड़ने के लिए पुलिस जो भी चाल चलती है, वही फिल्म का आकर्षण होता है। कभी फिल्म के नायक, नायिका या सबसे शरीफ पात्र के भी कातिल होने की स्थितियां निर्मित की जाती है। यानी दर्शकों को बांधने और उनका ध्यान बांटने के लिए कई हथकंडे रचे जाते हैं। देखा जाए तो दर्शकों को वही सस्पेंस फ़िल्में ज्यादा पसंद आती है, जो उन्हें हर सीन में चौंका दें। तीसरी मंजिल, ज्वेल थीफ, क़त्ल और 'गुप्त' के बाद 'दृश्यम' सीरीज की दोनों फिल्मों ने दर्शकों को जिस तरह बांधकर रखा वही इन फिल्मों का सफलता रही।

इस तरह के कथानक पर बनने वाली फिल्मों के पन्ने पलट जाएं, तो हिंदी में मर्डर मिस्ट्री और सस्पेंस फिल्मों की शुरुआत का श्रेय विजय आनंद को जाता है। उन्होंने

'तीसरी मंजिल' और 'ज्वेल थीफ' उस दौर में बनाने की हिम्मत की, जब दर्शकों को ऐसी कहानियों का अंदाजा भी नहीं था। इन फिल्मों में पैसा लगाना भी एक तरह से जुआं ही था। पर, विजय आनंद ने दर्शकों पर अपना जादू चलाया और उनकी कई फ़िल्में पसंद की गई। उन्होंने ऐसे कई प्रयोग किए, जो सस्पेंस से लबरेज थे। इसी तरह रामगोपाल वर्मा की 'कौन' को हिंदी की बेस्ट साइकोलॉजिकल थ्रिलर फिल्म कहा जा सकता है। यह पूरी फिल्म घर में बंद एक लड़की (उर्मिला मातोंडकर) की कहानी है, जो अजनबी (मनोज बाजपेयी) से बचने की कोशिश में रहती है। लेकिन, यह फिल्म ऐसी लड़की की कहानी है, जो बाहर निकलने से डरती है और खुद को घर में बंद कर लेती है। उसका डर ही फिल्म का क्लाइमैक्स है।

बॉबी देओल, काजोल और मनीषा कोइराला की 'गुप्त' बेहतरीन सस्पेंस थ्रिलर फिल्म थी। इसमें अंत तक किसी का ध्यान नहीं जाता और खलनायिका काजोल निकलती है। विद्या बालन की 'कहानी' और 'कहानी-2' दोनों ही फ़िल्में दर्शकों को अंत तक कुर्सी से बांधकर रखती है। किसी दर्शक को अंदाजा नहीं होता कि आखिरी में क्या होगा! फिल्म 'नैना' एक अंधी लड़की की कहानी थी, जिसकी आंखें ट्रांसप्लांट की जाती है। लेकिन, इसके बाद उसे अजीब सी चीजें दिखाई देने लगती है। 'बदला' को हाल के दौर की बड़ी मर्डर मिस्ट्री फिल्म माना जाता है! इसे अंत तक देखने के बाद ही समझ आता है कि आखिर फिल्म क्या चाहती है! ये पूरी फिल्म सस्पेंस से भरी है! कलाकारों का अभिनय भी हैरान करता है! जबकि, आज के दौर की सस्पेंस फिल्मों में 'दृश्यम' और इसका सीक्वल सबसे अच्छा उदाहरण है। इसमें अपराधी सामने होता है, लेकिन न तो पुलिस उसे पकड़ पाती है और न दर्शकों को समझ आता है कि उसने ये सब किया कैसे होगा! इस फिल्म में कोई मारधाड़ नहीं थी और न रहस्य! हत्यारा सबके सामने होते हुए अपनी चतुराई से बचता रहता है। कोई ठोस सबूत न होने से पुलिस भी अंत तक उस पर हाथ नहीं डाल पाती! इसमें सस्पेंस और इमोशन का ऐसा घालमेल किया जाता है, कि फिल्म देखने वाले भी हत्यारे के पक्ष में नजर आ जाते हैं। वे भी नहीं चाहते कि अपराधी पकड़ा जाए! कानून, गुमनाम, मेरा साया, इत्तेफाक, धुंध, अपराधी कौन, कब क्यों और कहां, खिलाड़ी, गुप्त, वह कौन थी, डिटेक्टर व्योमकेश बक्शी, मनोरमा सिक्स फीट अंडर, भूल भुलैया, एक चालीस की लास्ट लोकल, बदला, जानी गद्दार, अगली, तलवार, अंधाधुन, क़त्ल, दृश्यम और 'कहानी' ऐसी ही फ़िल्में हैं, जिनका जादू दर्शकों पर जमकर चला।

कुछ साल पहले तक फिल्म के अंत को गोपनीय बनाए रखने हिदायत भी इसी लिए जाती थी कि फिल्म देखने आने वाले दर्शकों में सस्पेंस बना रहे। इसलिए कि ऐसी फिल्मों के अंत में कुछ ऐसा होता था, जो देखने वालों को चौंका देता था। फिल्म का कथानक कुछ इस तरह गढ़ा जाता था, कि दर्शक उसके आकर्षण में फंस जाते। वे कहानी के ट्विस्ट को असलियत देख नहीं पाते थे और जब राज खुलता तो ऐसा पात्र संदेहों से घिरा मिलता, जिस पर किसी की नजर नहीं जाती! सस्पेंस फिल्मों में चौंकाने वाले अंत का दौर अभी खत्म नहीं हुआ! बस, दर्शकों को ये हिदायत देना बंद कर दिया गया कि फिल्म का अंत किसी को न बताएं! ऐसी फ़िल्में सिर्फ कलाकारों के अभिनय से ही दर्शकों को नहीं बांधती, इनकी पटकथा लेखन और डायरेक्शन भी कुछ नयापन होता है। अब तक कई थ्रिलर फ़िल्में आईं, लेकिन सभी दर्शकों को बांध नहीं पाई। याद वहीं रहती, जिन्होंने अपनी पटकथा और डायरेक्शन का जादू दिखाया। पुरानी फिल्मों में तीसरी मंजिल, ज्वेल थीफ, इत्तेफ़ाक़, गुमनाम और आज के दौर की ए वेडनस डे, बदला, हमराज़, 100 डेज के बाद आयुष्मान खुराना की फिल्म 'अंधाधुंन' और अजय देवगन की 'दृश्यम' ऐसी ही ऐसी फ़िल्में हैं, जिनके क्लाइमैक्स ने दर्शकों को कुर्सी पर ठीक से बैठने नहीं दिया। 'अंधाधुन' ने तो एक नया ट्रेंड बना दिया। इसमें एक अंधे आदमी का किरदार काफी रहस्यमय था। फिल्म की कहानी इसी के आस-पास घूमती है। इस पूरी फिल्म में अच्छा-खासा सस्पेंस बनाकर रखा गया। ओटीटी के आने के बाद से सस्पेंस और थ्रिलर फिल्मों का क्रेज कुछ ज्यादा ही बढ़ गया है।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

आजादी के दिन 'स्त्री' चंदेरी में आतंक मचाएगी

स्त्री 2 स्वतंत्रता दिवस यानी 15 अगस्त को सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली है। इस फिल्म का फैंस बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। इसी बीच मेकर्स ने राजकुमार राव, श्रद्धा कपूर, पंकज त्रिपाठी स्टारर फिल्म 'स्त्री 2' का टीजर रिलीज कर दिया। फिल्म का टीजर लोगों को पसंद आ रहा है और डरा भी रहा है। फिल्म का टीजर देखने के बाद लोग ज्यादा ही एक्साइटेड हो गए हैं। फिल्म का टीजर देखने के बाद लोग इस पर रिएक्शन भी दे रहे हैं। 'स्त्री' साल 2018 में रिलीज हुई थी और इसे बॉक्स ऑफिस पर काफी अच्छा रिस्पॉन्स मिला था। इस फिल्म ने कॉमेडी और हॉरर से एंटरटेनमेंट का डबल डोज दिया।

'स्त्री' के सीक्वल का काफी समय से इंतजार किया जा रहा है। फिल्म 'स्त्री 2'

सिनेमाघरों में 15 अगस्त को रिलीज होने के लिए तैयार है। इसी बीच मेकर्स ने फिल्म का टीजर रिलीज कर दिया है। मेकर्स ने फिल्म 'स्त्री 2' का टीजर शेयर करते हुए लिखा 'इस बार चंदेरी में आजादी के दिन होगा आतंक। स्वतंत्रता दिवस के दिन लीजेंड वापस आ रहे हैं।' फिल्म का टीजर लोगों लोगों डरा रहा है। हालांकि, कॉमेडी का डोज लोगों को गुदगुदा भी रहा है। फिल्म 'स्त्री 2' का टीजर देखने के बाद लोग सिनेमाघरों में जाने के लिए उत्सुक हो रहे हैं और 15 अगस्त का इंतजार कर रहे हैं।

राजकुमार राव, श्रद्धा कपूर, पंकज त्रिपाठी स्टारर फिल्म 'स्त्री 2' के डायरेक्शन की जिम्मेदारी अमर कौशिक के पास थी। इस फिल्म को दिनेश विजान की प्रोडक्शन कंपनी मैडॉक फिल्म ने बनाया है। फिल्म 'स्त्री 2' का अक्षय कुमार की फिल्म 'खेल खेल में' और जॉन अब्राहम की फिल्म 'वेदा' से बॉक्स ऑफिस क्लैश होगा। ये तीनों फिल्में 15 अगस्त को सिनेमाघरों में रिलीज होने जा रही हैं।

अनायास और अकस्मात होती है फिल्मी बरसात

अशोक जोशी

आसमान पर इन दिनों बादल घुमड़ रहे हैं। कहीं झमाझम बारिश हो रही है तो कहीं इसने धीरे से दस्तक दी है। आमतौर पर धरती पर ऋतुचक्र के हिसाब से बरसात होती है। लेकिन,

हिंदी सिनेमा में कभी अनायास तो कभी अकस्मात बारिश हो जाती है। हिंदी सिनेमा में बारिश का विभिन्न उद्देश्यों के लिए इस्तेमाल किया गया है। गीतों में, दृश्यों में अथवा कथानक में मानव मन की अनेक भावनाओं को बारिश का सहारा लेकर दिखाया जाता रहा है।

चाहे प्रेमाग्नि का सुलगना हो या भड़कना, कामेच्छा, बहकना, अकेलापन, निराशा और यहां तक कि खतरा और हत्या के दृश्यों को फिल्माने में भी बारिश की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। राज कपूर की फिल्म 'बरसात' के गीत बरसात में हमसे मिले तुम से शुरू हुआ यह सिलसिला आज तक जारी है। उनकी लगभग हर फिल्मों में बरसात का एक दृश्य देखने को जरूर मिलता है। बरसात, आवारा, मेरा नाम जोकर और 'सत्यम शिवम सुंदरम' के बरसाती दृश्य भूलाए नहीं भूलते। 2007 में प्रदर्शित हुई फिल्म 'लाइफ इन ए मेट्रो' में नायक नायिका के बीच रोमांस इसी बारिश के मौसम में परवान चढ़ता है। इसी प्रकार 1969 की फिल्म 'आराधना' में बरसाती रात में रूप तेरा मस्ताना गीत गाते नायक-नायिका मिलन और 1973 की फिल्म 'जैसे को तैसा' में अब के सावन में जी डर गीत के दौरान नायक-नायिका की मुद्राएं सिने प्रेमियों को आज भी याद है। रोटी, कपड़ा और मकान (1974) में नायिका हाय हाय यह मजबूरी गीत गाते हुए नायक को ताना देती है कि तेरी दो टके की नौकरी के चक्कर में मेरा लाखों का सावन यूं ही व्यर्थ बीता जा रहा है।

हिंदी फिल्मों के ऐसे दृश्यों की भरमार है,जिनमें नायक-नायिकाओं के भाव प्रकट करने के लिए बारिश का सहारा लिया गया है। 'चांदनी' (1989) में सह नायक विनोद खन्ना अपनी दिवंगत पत्नी की याद में जो गीत गाता है उसके लिए बारिश की पृष्ठभूमि उपयुक्त लगती है। इसी प्रकार 1984 की फिल्म 'मशाल' में ट्रेजडी किंग दिलीप कुमार अपनी घायल पत्नी की मदद के लिए भीगी रात में ही गुहार लगाते हैं। कंपनी (2002) और जॉनी गद्दार

(2007) के दृश्यों, जिसमें काफी खून-खराब था। इनको फिल्माने के लिए बारिश को ही उपयुक्त समझा गया। इसी तरह मनोज कुमार की 1974 में प्रदर्शित 'रोटी कपड़ा और मकान' तथा इसके सात साल बाद 1981 में आई 'क्रांति' में देह दर्शन के लिए बरसात का सहारा लिया गया था।

नायक और नायिका की पहली मुलाकात में प्यार हो जाने का भावुक दृश्य दिखाने के लिए भी बारिश का मौसम बड़ा माकूल माना जाता है। फिल्म 'बरसात की रात' (1960) का सदाबहार गीत जिंदगी भर नहीं भूलेगी बरसात की रात वाले दृश्य के जरिये नायक-नायिका को कभी विस्मृत न कर पाने की भावना बड़ी शिद्दत से पेश करता है। प्रसिद्ध फिल्म अभिनेता आमिर खान की फिल्म 'लगान' (2001) में भी सूखे से ग्रस्त गांव में वर्षा के देवता से बरसने की प्रार्थना के लिए जो गीत घनन घनन घिर आए रे बदरा के रूप में गाया जाता है। उसके समाप्त होते-होते नायक-नायिका बारिश में भीगते नजर आते हैं। देवानंद की अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त फिल्म 'गाइड' जो 1965 में प्रदर्शित हुई थी, में भी सूखाग्रस्त गांव में पानी बरसाने के लिए सन्यासी से प्रार्थना की जाती है।

मानव मन की तमाम भावनाओं हर्ष, व्यथा,

रोमांस, प्रतिशोध, हिंसा आदि को व्यक्त करने के लिए हिंदी फिल्मों में बारिश एक सशक्त माध्यम माना जाता रहा है। हिंदी फिल्मों में नायक-नायिकाओं और अन्य चरित्रों, परिस्थितियों और मनोदशाओं को व्यक्त करने के लिए बारिश का सहारा लिया जाता रहा है। अनेक फिल्मों के शहरी पृष्ठभूमि के चरित्र भी बारिश का आनंद लेते दिखाई देते रहे हैं। 1977 की फिल्म 'प्रियतमा' में नीतू सिंह द्वारा छम छम बरसे घिर घिर बदरिया की और माधुरी दीक्षित का 'दिल तो पागल है' (1997) फिल्म में बच्चों के साथ सड़कों पर नाचते हुए यह गाना चक धूम धूम कुछ ऐसी ही कहानी सुनाते हैं। यहां 1973 की फिल्म 'दाग' का उल्लेख करना समीचीन होगा जिसमें लगभग सभी महत्वपूर्ण घटनाएं भारी वर्षा के दौरान ही होती है।

रहस्यमयी फिल्मों को तो बरसात और भयावह बना देती है। 1964 की फिल्म 'वह कौन थी' में गिरती बरसात के बीच रहस्यमयी मुद्रा में साधना पर फिल्माया गीत नैना बरसे रिमझिम रिमझिम कौन भूल सकता है। फिल्मी बलात्कार को भी बरसात में फिल्माकर फिल्मकारों ने इसके वीभत्स रूप पर्दे पर प्रस्तुत करने का काम किया है। 1985 की 'अर्जुन' फिल्म में छतरियों की भीड़ के बीच फिल्माया गया मारपीट का दृश्य बहुत ही दर्शनीय बन पड़ा था। तो आज रपट जाए जैसे गीत सिनेमा हॉल में बैठे दर्शकों को गुदगुदाने में सफल रहे हैं।

बरसाती गीतों के अलावा कुछ फिल्मों के शीर्षक बरसात पर आधारित है कई फिल्मों में बरसात के प्रतीक सावन को महत्व दिया गया है। सावन की घटा (1966) आया सावन झूम के (1969), सावन को आने दो (1979), प्यासा सावन (1981), बरसात (2005), बरसात की एक रात (1998) और बारिश (1957, 1990) ऐसी कुछ फिल्में हैं, जिनके नाम में तो सावन अथवा बरसात है परंतु उनके कथानक से बारिश का कोई लेना-देना नहीं था। कुछ समय पूर्व अंग्रेजी-हिंदी में बनी मीरा नायर की मानसून वेडिंग की कथावस्तु में अवश्य वर्षा का कुछ महत्व था।

यह फिल्म भारत में बरसात के मौसम में पंजाबियों की शादी से संबंधित कहानी पर आधारित थी। सबसे मजेदार फिल्म तो 1970 में प्रदर्शित 'सावन भादो' थी। इसमें पर्दे पर न तो सावन की फुहारे नजर आयी और न भादो की भारी बरसात इसके बावजूद फिल्म रेखा के लावण्य की बरसात ने इसे सफल फिल्मों की सूची में जगह दिलवा दी थी। एक और फिल्म आई थी बिन बादल बरसात जिसमें बरसात कम और जिंदगी कितनी खूबसूरत है आइए आप की जरूरत है जैसे रोमांटिक गीत ने फिल्म को केवल वयस्कों तक सीमित कर दिया था।

वो आती थी, कि ये निकली...!

प्रकाश पुरोहित

उ मौसम विभाग कभी सही नहीं होता और बिजली विभाग कभी गलत नहीं। पहली बूंद का अंदेशा भी हो तो घर की बिजली चल देती है, जैसे सूरज के डूबने पर चांद निकल आता है या महुआ मोइत्रा के भाषण से ठीक पहले संसद से उठ कर मोदी चल देते हैं। अमृत-काल में यह उपलब्धि किसी ने मार्क नहीं की है, क्योंकि बड़ी-बड़ी चीजें हो रही हैं, जैसे हर रोज एक पुल के हिसाब से बिहार अकेले में ही दर्जन से ज्यादा पुल गिर गए या अयोध्या में मंदिर टपकने लगा, नए-नए रेल स्टेशन की दीवार दंडवत मुद्रा में आ गई या जबलपुर का एयरपोर्ट धंस गया और दिल्ली के इंटरनेशनल एयरपोर्ट की छत टपक गई और मणिपुर का दर्द तो जाने ही दीजिए। बताइए, इन सबके बीच इस पर कौन ध्यान देगा कि बारिश के अंदेशे में ही घर की बिजली गुल हो जाती है। अब तो हालत यह हो गई है कि ना बिजली के जाने पर सामूहिक स्वर गूंजते हैं और ना आने पर राहत की सांस कि क्या पता नश्वर बिजली का, है और नहीं है!

यह तकनीक कहां से और किसने खोजी है, यह तो नहीं पता, लेकिन है बड़ी कारगर। हालत यह है कि घरों के बच्चे बिजली गुल होते ही समझ जाते हैं कि बाहर छींटाछांटी शुरू हो गई होगी। होती है, कभी-कभी गलती भी कि ऊपर वाली भाभी गीले कपड़े, बगैर निचोड़े सूखने डाल देती हैं गैलरी में तो भी कुछ बूंदें बिजली के जाने की वजह बन जाती हैं। बूंदाबांदी की समयावधि से यह तय नहीं होता है कि बिजली कितनी देर के लिए गायब हुई है। जब हर तरफ से नक्की हो जाता है कि अब बारिश की कोई संभावना या आशंका नहीं है, तभी बिजली का पुनरागमन होता है। यह तो नहीं कह सकते कि यह संयोग है। बारिश का आना संयोग हो सकता है, लेकिन बिजली का गायब होना तो सोची-समझी स्कीम के तहत होता है। हमारे यहां मौसम विभाग की कोई इज्जत नहीं है। बारिश का असली ज्ञान तो बिजली वालों को रहता है। तय समय पर बारिश भले ही ना हो, बिजली जरूर बंद हो जाती है। याद करना पड़ता है कि किस सन् या सम्वत् में बारिश और बिजली का चोली-दामन का साथ रहा था। याद कीजिए... बाहर बारिश और अंदर बिजली एक साथ आखिरी बार कब देखी थी!

आसमान में बिजली कड़कती है और घरों की बिजली दम तोड़ने लगती है। यह नजारा ठीक वैसा ही होता है, जैसे आतिशबाजी के दौरान बिजली इसलिए गुल कर दी जाती है कि पटाखों का भरपूर आनंद लिया जा सके। एक म्यान में दो तलवारें भी समझ सकते हैं कि या तो आसमान में ही बिजली रहेगी या फिर घरों में। जैसे जब मोदी होते हैं किसी धार्मिक आयोजन में तो फिर सिर्फ वो ही होते हैं... राम-मंदिर याद कर लें। फिजूलखर्ची बिलकुल बर्दाश्त नहीं है बिजली विभाग को, जबकि ऐसा करने में उसका ही घाटा है। वैसे भी सरकार कहां कमाने के लिए बैठी है। इसे यूं भी समझ सकते हैं कि बढ़ती महंगाई में बिजली का कोई

योगदान दर्ज ना हो, इसलिए बिजली इस किफायतशारी से दी जाती है कि यह अफसोस भी ना हो कि बिजली नहीं और यह दुःख भी नहीं कि बिल इतना ज्यादा आ गया कि कहां से भरें! इस तरह से उस स्टाफ को भी राहत मिल जाती है, जो आए दिन सीढ़ी लिए बिल भुगतान के अभाव में बिजली के कनेक्शन काटता फिरता है।

पहले तो बच्चे भी चॉकलेट की शर्त लगा लेते थे कि अगर लाइट गई है तो बारिश शुरू हुई या नहीं, अब यह खेल भी बंद हो गया है। सभी जान गए हैं कि बारिश के साथ जाने वाला ही चॉकलेट जीतेगा। हां, अब यह शर्त जरूर लगती है कि अगर बत्ती एक घंटे के लिए गुल हुई है तो शहर में कुल बारिश कितनी हुई और अगर आधे घंटे में तीन बार गुल हुई है तो कितनी बारिश! लाइट गायब होने पर भी यह शर्त कोई नहीं लगाता कि बारिश शुरू हुई या नहीं। ऐसा भी हुआ कि बाहर देखने गए और बारिश होने लगी। बच्चों को हैरत होती है कि बिजली वालों के पास ऐसा कौन-सा यंत्र है, जिसकी वजह से इन्हें पहले ही पता चल जाता है कि 'आ गई है, आ रही है, आ रही होगी!' यह भी बिजली वालों की तरक्की का सबूत है कि बारिश का क्षेत्रफल देख कर खटके पर हाथ जाता या उठता है।

बारिश भले ही फैल हो जाए, बिजली वाले पूरी मुस्तैदी और ईमानदारी से बंद करते रहते हैं। अफवाह तो ऐसी भी फैलाई गई कि टाइम पास के लिए बंद-चालू करते होंगे, मगर ऐसा नहीं है, उनका फोन तो हर समय इंगेज ही रहता है। मेरी बड़ी इच्छा है कि बिजली से नाता तोड़ने और जोड़ने वाले तार को नजदीक से देखूं कि आखिर किस मिट्टी के बने हैं। जरा-सा पानी लगा नहीं कि बिजली छोड़ देते हैं। पहले तो यही लगता था कि कहीं कागजी तो नहीं बनाए गए हैं जनता की सुविधा के लिए, लेकिन जब लोगों को लिंगड़ के जरिये घरेलू बिजली उत्पादन करते देखा तो मेरी रात की धारणा गलत निकली। आग लगने पर फायर ब्रिगेड भले ही ना आए, बिजली जाने पर गाड़ी फौरन आ जाती है। यह अलग बात है कि बिजली लौटाने में उसे कितना समय लगता है।

दुष्यंत का शेर है ना, 'सब्र कर...।' सभी को यह उम्मीद रहती है कि अब गाड़ी आ गई तो किसी भी पल बिजली की घर वापसी संभव है। काम हो रहा है, यह धैर्य बिजली विभाग की मेहरबानी से आम आदमी सीखता है। कई बार तो शाम से सुबह हो जाती है!

अब आप तो जानते ही हैं कि सोहबत का असर तो होता ही है। बारिश सालभर होती नहीं है, तो फिर यह सेवा हवा भरोसे हो जाती है कि कहीं पत्ता हिला और इधर बिजली गुल। विक्रम-बेताल पढ़ा नहीं होगा चंदा मामा में, लेकिन सीरियल तो देखा ही होगा, कैसे विक्रम ने कुछ कहना शुरू किया और बेताल फिर डगाल पर। यहां तो हम कुछ नहीं करते हैं, फिर भी बिजली है कि ना जाने किस अपराध की सजा देती रहती है और हम भी पूर्व जन्म पर यकीन करने लगते हैं कि होंगे कुछ पुराने पाप, जिनका प्रायश्चित इस तरह अंधेरे में भुगतना होता है, ना जाने कब तक। बेचारे दिग्विजयसिंह को फिजूल ही सरकार से बाहर किया था हमारे पूर्वजों ने!

ठाकुर परिवार की स्त्रियां: रवींद्रनाथ की पत्नी की व्यथा

और क्या कह रही है ज़िंदगी

ममता तिवारी

लेखिका साहित्यकार हैं।

द्वा जो ठाकुर परिवार रवींद्रनाथ टैगोर के नाम से जाना जाता है उन्हीं रवींद्रनाथ टैगोर की पत्नी के जीवन का ज़िक्र चौथे भाग के कर रही हूं सीरियल में जिसे हम सीरीज कहते थे (जिसको शुरू करने की पुनः आवश्यकता है)। दरअसल टैगोर चौथी पीढ़ी में चौदह भाई बहनों में सबसे छोटे थे और बरगद जैसे विशाल व्यक्तित्व वाले व्यक्ति की अदना पौधे सी पत्नी की कहानी कोई क्यों सुनता जो कह सकती थीं, पर लिख नहीं सकती थीं। वहीं स्त्री मानो जीवित हो उठी रंजन बंधोपाध्याय के उपन्यास 'मैं रवींद्रनाथ की पत्नी' में, जिसमें प्रोमो है 'मृणालिनी की गोपन आत्मकथा' अनुवाद शुभ्रा उपाध्याय का है। देखिये, जब पात्र जिंदा ना हो और कथा में फर्स्ट फार्म में उससे बात कहलाई जा रही हो तो कई बार लगता है कि ये लेखक का फिक्शन होगा। याद है 'जोधा अकबर' का जब विरोध हुआ तो आशुतोष गोवारिकर का जवाब था, मैंने ये कल्पना की है कि एक स्त्री का सौदे या संधि के तहत विवाह हुआ होगा और स्त्री स्वाभिमानी हो तो उनका प्रेम संबंध कैसा बना होगा। हालांकि, उन्होंने काफी ऐतिहासिक तथ्य जुटाये भी थे। वहीं बात मृणालिनी की कथा में है और जैसे हालात और तथ्य है हम मानने पर मजबूर हो जाते है इतने विशाल व्यक्तित्व की एक साधारण रंगरूप बुद्धि वाली स्त्री ने कैसे जीवन व्यतीत किया होगा या इतना बुद्धिमान व्यक्ति मृणालिनी से कैसे पेश आया होगा। पांच बच्चे प्रेम की निशानी थे क्या? या मृणालिनी का सवाल जो रवींद्रनाथ की जिंदगी रहन-सहन को देखकर करती कि 'मुझ साधारण सी स्त्री से विवाह क्यों किया? और किया तो सह धर्निणी सा सम्मान क्यों नहीं दिया? रवींद्रनाथ की चिठ्ठियों के जवाब में मृणालिनी ने भी तो ख़त लिखे होंगे। वे कहां है? मृणालिनी अपनी गोपन आत्मकथा में क्या लिखती इस उपन्यास में यही सोचने की कोशिश हुई है। मृणालिनी देवी के बक्से से और सुनी सुनाई बातों से, कुछ फैले कागजों से, कुछ उनके भावुक स्त्री मन से समझ आने वाले भावों से उन्हीं के मुंह से कहलवाया गया।

1886 से 1896 दस वर्षों में रवि ठाकुर ने पांच बेटी-बेटे दिए। रवि ठाकुर से मेरा विवाह 9 दिसंबर 1883 में हुआ था जब मैं मात्र नौ वर्ष नौ महीने की थी और रवि बाबू 23 वर्ष के। पता तो यही था वे बाल विवाह के खिलाफ थे फिर क्यूं? ख़ैर, इस क्यूं का उत्तर मुझे कभी नहीं मिला। मेरा पहला बड़ा बेटा रथी 1888 में हुआ। मेरे सारे बच्चे ठंड में, प्रसूति कक्ष (जिसके बारे में सोच के रूह कांपती थी) की सीलन भरी हवा में पैदा हुये। मझले जेठ सत्येन ठाकुर की पुत्री इंदिरा के बारे में वे बार-बार भूल जाते थे कि वो उनकी भतीजी है। कई बार मैंने कहा कि आप जैसे इंदिरा से दिल की बातें करते है तुझसे क्यों नहीं? मैं पूरे समय तुम्हारे साथ रही फिर ये पर्दा क्यों? वे मुस्कुरा दिये। वे शिलाईदह में रहते थे और इंदिरा को रोज़ चिठ्ठी लिखते थे। 1887 से 1895 तक उन्होंने इंदिरा को 252 चिठ्ठियां लिखी और मुझे दी पंद्रह चिठ्ठी पांच संतानें। आपके रवींद्रनाथ की मेरे प्रति भाव भंगिमा बड़ी उपेक्षित थी। मुझमें कोई रसबोध नहीं है ये मुझे समझा दिया गया। मैं उन्हें जल्दी ही मुक्त कर दूंगी। जाने क्या सोचकर वो

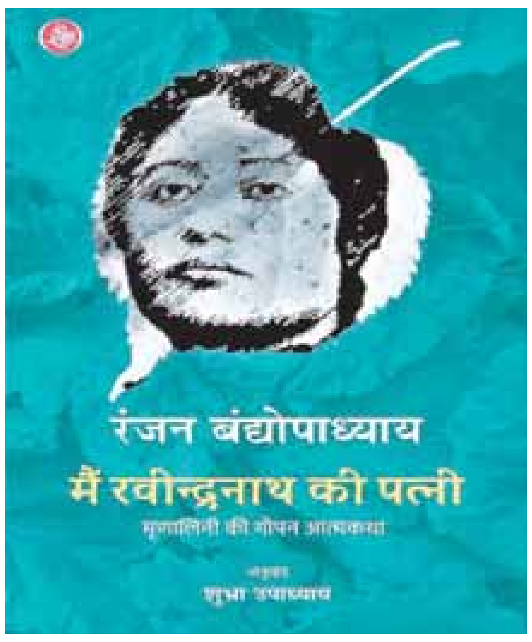

अपने बड़े भाई की पत्नी कांदबिरी देवी से प्रेमसंबधों की बातें चिठ्ठियां, कवितायें, बताते रहे। पूरी दोपहर उनके कमरे में बीतती। वे सांवली थी पर भरपूर सुंदरी थीं। उन्हें घर का कोई पसंद नहीं करता। सब उनके बारे में जानते थे कि वे रवि बाबू के जीवन का ध्रुवतारा थी। पर बंबई की आन्ना, विदेश में विवियन, लूसी मिस मूल, नाच गाना थे सब बातें वो कांदबिरी देवी को लिखते जो रवि ठाकुर की अनुस्थिति से बीमार रहने लगी। जैसे ही रवि ठाकुर विलायत से लौटे दोनों बचपन के बिछड़े संगी की तरह मिल छत पर उपवन लगाने लगे। खूब कविता, गीत, संगीत की महफिल जमी जिसका केंद्र कादंबिरी थी। मैं कहां थी? उनके पति उन दोनों के लिये नाटक लिखते। मैं कभी उनके साथ गाजीपुर, सिलाई दह रहती और व्यंजन बना खिलाती। मैं उनकी भावनाओं की साथी कभी नहीं रही। मैं देखने में इतनी खराब और मेरा पति इतना सुंदर क्यों हुआ? सो एक दिन रंग रोगन लगा मैं उनके समक्ष गई सो वे नाराज़ हो गये। शांति निकेतन में मैंने विद्यार्थियों के भोजन का जिम्मा लिया और मेरे सारे जेवर बिक गये और कवि बाबू कादंबिरी देवी से जुड़ी बातें, कवितायें प्रसंग सुनाते रहे, सोचते हुये कि मुझे चोट नहीं लगती। मैं कितना पानी बहा चुकी। मेरी पीड़ा उन्होंने नहीं समझी पर हमेशा कादंबिरी की तकलीफ को महसूस करते। लिखने में खराब लग रहा है पर मेरी मृत्यु के बाद कोई खोज निकाले तो क्या प्रकाशित होगा? विलायत से लौटते ही दोनों ने सीमाओं का ऐसा अतिक्रमण किया कि बाबू मोशाय ने रवि बाबू को पुनः विलायत भेजा व कादंबिरी देवी को उनके पति के साथ चंदननगर। पर रवि बाबू जहाज से उतरकर सीधे चंदननगर चले गये जहाँ उन दोनों ने प्रेम से दिन गुजारे। विवाह के समय रवि बाबू ने मेरी बदसूरती का मजाक बनाया और सब सामान फेंक दिया।

मेरा विवाह हुआ दिसंबर 1883 में अप्रैल 1884 में कादंबिरी देवी ने आत्महत्या कर ली। उनके कमरे से ढ़ेरों कागज़, चिठ्ठियां बरामद हुई जिन्हें चादर में बांध घर से बाहर ले जाया गया। मैं स्तब्ध थी वो बच सकती थी। पुलिस को हार्ट अटैक बताया गया। मेरे ही घर की जेठ की बहू पति के मरने के बाद मायके भेज दी गई। वहाँ उनके पिता ने उनका दूसरा विवाह रचाना चाहा। विधवा विवाह के हिमायती रवि ठाकुर उसे वापस जोड़ा सांको ले आये। इसी बीच मैं जो रवि बाबू की प्रेम कहानियां सुनकर बड़ी हुई अचानक बलू जो एक पैर से अपाहिज था मेरे जेठ का बेटा उसने मुझे संस्कृत पढ़ना सिखाया। शांति निकेतन मेरे ससुर की कल्पना थी जो बलू पूरी करना चाहता था। एक दिन मैं और बलू आत्महत्या करने निकले पकड़े जाने पर रवि ठाकुर स्वाधीनता के विरूद्ध दृढ़ प्रतिज्ञ हुये और मरते दम तक मैं बलू को नही देख पाई, पर किसी ने भी शांति निकेतन के उद्घाटन में उसका जिक्र तक नहीं किया। मेरी दोनों बेटियां मेरी मित्र थीं। बाल विवाह के विरोधी मेरे पति ने 15 और 10 साल की उम्र में उनका विवाह कर दिया।

अस्त व्यस्त तरीके से लिखी गई इस कथा में तो ऐसा होना ही था। विश्व प्रसिद्ध पति की पत्नी का कोई अस्तित्व नहीं होता। 13 सितंबर 1902 में मैंने लिखना बंद किया और बेहोशी में चली गई। उनकी अंतिम इच्छा छोटे बेटे शमी को देखने की थी जो पूरी नहीं हुई। बड़े लड़के रथी से पाँच मिनट मिलना हुआ और 23 नवंबर 1902 को वो चल बसी। लेखक के अनुसार बड़े पुत्र को व स्वयं भी शमशान नहीं गए। 28 रूपया 2 पैसा में उनकी अन्त्येष्टि पूरी हुई और रवि उनके स्मरण लिखने बैठ गये जो बारह वर्ष बाद प्रकाशित हुये। समर्पण में जिसकी सदैव रूचि रही उस पत्नी के लिये रवि बाबू ने लिखा। 7 अगहन 1309 मृणालिनी का प्रयाण दिन।

अनुकरणीय

उन अनाम शिक्षकों पर मुझे हुआ गर्व

स्कूली शिक्षा को लेकर जारी होने वाली हर रिपोर्ट में ड्रॉप आउट यानी स्कूल न आने वाले बच्चों की संख्या पर चिंता जताई जाती है। और फिर जतन होता हैं इन बच्चों को स्कूल लाने का। इन्हीं जतन का एक रूप है स्कूल चले हम। लेकिन मैंने अपनी यात्राओं के दौरान खानाबदोश, काम के लिए पलायन कर आए परिवारों को देखा, जाना है तब-तब पाया है कि उनके बच्चों को शिक्षा नहीं मिलती। बच्चों की यह दशा या कहिए असहायता मुझे भीतर तक झकझोर देती है। मैं स्वयं को असहाय पाता हूं कि इन बच्चों की शिक्षा का प्रबंध नहीं कर पा रहा हूं।

इन दिनों जलगांव में हूं और यात्रा के दौरान अपनी आदत के मुताबिक फोटोग्राफी के लिए अजंता रोड की ओर निकल गया। साथ में मेरे दामाद संतोष पवार भी थे। सड़क के दोनों ओर के फोटो ले रहा था तभी सड़क के किनारे पांडाल पर नजर पड़ी। यह गणपति की मूर्तियां बनाने वाले परिवार का पांडाल था। इन जैसे परिवार राजस्थान से यात्रा कर देश के अनेक हिस्सों में पहुंच जाते हैं जहां मूर्तियां बना कर आजीविका का यापन करते हैं।

इस पांडाल के फोटो लेते हुए मेरी नजर एक बालिका पर पड़ीं। उसके हाथों में कापी थी। मैं तुरंत उसके पास गया। बालिका के हाथ में कॉपी होना मेरे लिए अचरज का कारण था। यह अबतक के मेरे अनुभवों से विपरीत था। अब तक जहां जहां भी मूर्ति बनाने वालों के आशियाने में गया वहां अधिकांश जगह बच्चे मिले लेकिन वे कभी स्कूल नहीं गए। जलगांव के इस पांडाल में मुझे बच्ची के हाथ में कॉपी दिखी तो मेरा चौंकना स्वाभाविक ही था। करीब से देखा तो पाया कि कॉपी में एबीसीडी लिखी हुई है। पूछने पर उस बच्ची ने अपना नाम राधा बताया। उसके अक्षर बड़े ही सुंदर थे। मैंने स्वभावतः पूछ लिया कि कौन से स्कूल जाती है तो पता चला कि वह स्कूल नहीं जाती। अब और आश्चर्य हुआ। कॉपी तथा लिखी गई एबीसीडी के बारे में पूछा तो पता चला कि कुछ स्कूली विद्यार्थी उन्हें पढ़ाने आते हैं। मैंने जिज्ञासावश उन विधार्थियों के बारे में पूछा लेकिन राधा को उनके बारे में कुछ पता नहीं था। मुझे उन बच्चों के अनाम शिक्षकों पर गर्व हुआ जो अपना सामाजिक दायित्व निभा रहे हैं। इन डेरे के सभी लोगों में केवल वे बच्चे ही पढ़े लिखे हैं। वे भविष्य में चाहें यही काम करें कोई हर्ज नहीं पर उनके अंदर शिक्षा का यह अंकुरण उनके जीवन की दिशा अवश्य बदलेगा।

फोटो और विवरण- बंसीलाल परमार

//भाषान्तर//

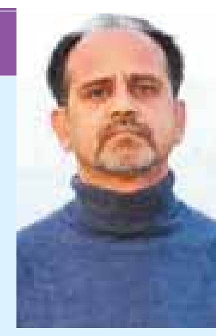

अनुवाद मणि मोहन

भाषान्तर में आज विश्व विख्यात लेखक ख़लील जिब्रान की एक रचना का अनुवाद।

वह स्कूल जहां मैं पढ़ता था

मैं उस स्कूल के करीब से गुजरा
जहाँ मैं कभी पढ़ता था
किशोर उम्र में
और मैंने मन ही मन कहा -
यहाँ मैंने कुछ चीजें सीखीं
और कुछ नहीं सीखीं।

ताउम्र मैं बेकार ही
उन चीजों से प्रेम करता रहा
जिन्हें मैंने सीखा नहीं था।
मैं ज्ञान से लबालब भरा हुआ हूँ,
मैं ज्ञान के दरख़्त के बारे में

सब कुछ जानता हूँ,
इसकी पत्तियों का आकार,

कैसे काम करती हैं इसकी जड़ें,
इसके कीट पतंगे और परजीवी।

मैं अच्छाई और बुराई के
वनस्पति विज्ञान का विशेषज्ञ हूँ,
मैं अभी भी इसका अध्ययन कर रहा हूं,

और मरने तक जारी रखूंगा।
मैंने स्कूल की इमारत के पास
खडे होकर उसके भीतर झांका।
यह वहीं कमरा है

जहां बैठकर हम पढ़ते थे।
कक्षा की खिड़की ह

मेशा भविष्य की तरफ खुलती है,
पर उस वक़्त
हम अपनी मासूमियत में
यही समझते रहे
कि वहां सिर्फ़ एक दृश्य था जिसे हम देखते थे।
स्कूल का प्रांगण संकरा था,
और वहां बड़े-बड़े पत्थर बिखरे हुए थे।
मुझे अभी भी याद है

वो छोटा सा झगड़ा

जो हम दोनों के बीच हुआ था
जर्जर सीढ़ियों के पास,

वो झगड़ा जो पहले

प्रेम की शानदार शुरुआत थी।
यह प्रेम हमसे अधिक टिका रहेगा,
जैसे किसी संग्रहालय में,
बाकी सभी चीज़ों की तरह

यरूशलम में।

उम्मीद पर 'सरकार' कायम है!

❐ यूके से प्रज्ञा मिश्रा

पा इंडिया और यूके... ज़िंदगी इन दो देशों के बीच बंट गई है। दोनों देशों में डूबा दिन कहां जाता है, पता ही नहीं चलता। डेढ़-दो महीने से चुनावी खबर छाई हैं। इंडिया में बीजेपी को बहुमत नहीं मिला है। यह दिखाता है, किस नशे में थे, जो इन्हें समझ ही नहीं आया कि जनता के साथ रिश्ता बदल गया है। दो दिन पहले ही इंग्लैंड में नई सरकार बनी है। जाते प्रधानमंत्री ऋषि सुनक को चुनाव की तारीख से ही पता था कि सरकार नहीं बनेगी। दोबारा कुर्सी नहीं मिलेगी। चार जुलाई को वोट तो बाद में डाले गए, यह अंदाजा यकीन में बदल चुका था कि 'अगली बार लेबर सरकार।'

चौदह बरस में टोरी पार्टी की लगातार जीत ने लोगों को उम्मीद से खाली कर दिया था। बदलाव नहीं हो रहा था। जो चौदह-पंद्रह बरस में युवा पीढ़ी बड़ी हो रही थी, यकीन करने लगी थी कि कुछ नहीं बदलेगा। उन्हें यह भी समझ

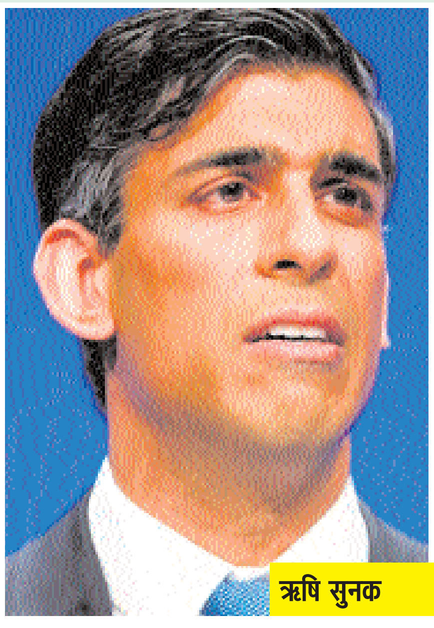

ऋषि सुनक

किएर स्टारमर

नहीं आ रहा था कि राजनीति में उम्मीद भरा विचार कैसे पैदा किया जाए। आठ बरस में टोरी सरकार और उसके प्रधानमंत्रियों (कैमरून, मे, जॉनसन, ट्रस और सुनक) से जनता किस कदर तंग आ चुकी थी कि सुनक के अलावा सभी पूर्व प्रधानमंत्री चुनाव ही हार गए हैं। सुनक की सरकार गई है, लेकिन उनकी सीट बरकरार है। यूके में नतीजों को लेकर आम तौर से खुशी है और इसे 1997 जैसा बदलाव मान रहे हैं, जब टोनी ब्लेयर लेबर पार्टी के प्रधानमंत्री बने थे। चुनाव से रातोंरात देश नहीं बदल जाते, लेकिन नतीजों से वो चेहरा दिखाई देता है, जो परतों में छिपा होता है। ये नतीजे लेबर पार्टी के कितने साथ और बदलाव की चाहत में आए हैं, इसका सही-सही जवाब कोई नहीं दे पाएगा। सुनक की पार्टी की बड़ी हार का बड़ा कारण जॉनसन की गलतियां भी हैं। ब्रेक्सिट के फैसले पर वोट डाले गए और जिम्मेदारों ने सिर्फ और सिर्फ अपने फायदे के लिए देश को ऐसी राह पर धक्का दे दिया, जो फिसलनभरा है, लेकिन नए प्रधानमंत्री किएर स्टारमर के दिन भी आसान नहीं होने वाले हैं, क्योंकि उनके खाते में पिछली सरकारों की कारगुजारियां आती जाएंगी और उनसे आस लगाए हैं।

लेबर पार्टी की सरकार से उम्मीदें थीं कि ब्रेक्सिट के समय सही पाले में खड़े रहेंगे, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। जब से इजराइल ने फलस्तीन पर हमला बोला है, तब से जनता इसे रुकवाने की मांग कर रही है और अगर स्टारमर जल्दी ही सही फैसले नहीं लेंगे तो आने वाले साल मुश्किल से ही कटेंगे। फिलहाल यह खुशी है कि राजनीति, चुनाव, प्रजातंत्र और वोट की वजह से बदलाव होते हैं। मुमकिन है कि नई सरकार ज्यादा हासिल ना कर पाए, लेकिन इस बात की चिंता नहीं है कि रोजाना की जिंदगी से उम्मीद खत्म हो गई है।